अखंड भारत की अखंड मुद्रा

मुद्रा पथ

वर्ष– 39, जनवरी 2020

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

प्रतिभूति स्याही कारखाना विशेषांक

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास-455 001(म.प्र.)

(भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लि., नई दिल्ली की इकाई)

सन्देश

नए नामकरण के साथ मुद्रणालय की राजभाषा पत्रिका मुद्रापथ के नवीन अंक के माध्यम से आपसे चर्चा करते हुए मैं प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ।

बैंक नोट मुद्रणालय देशा का एक गौरवशाली संस्थान है जो विभिन्न मूल्यवर्ग के बैंक नोटों के उत्पादन के साथ ही उसे रिजर्व बैंक की विभिन्न शाखाओं में आपूर्ति करने के कार्य में लिप्त है। यह एक संप्रभु कार्य है। बैंक नोटों के उत्पादन के अतिविशिष्ट कार्य में संलग्न हर अधिकारी एवं कर्मचारी को इस बात को ध्यान में रखकर कार्य करना होगा कि हमारा ग्राहक देश का हर नागरिक है एवं सभी के पास हमारे द्वारा किया गया कार्य करेंसी के रुप में मौजूद रहता है। इस अतिसंवेदनशील इकाई में कार्य करते हुए हमें अपने आदर्शों को बनाएं रखते हुए निस्वार्थ भाव से सतर्क रहते हुए एवं सजगतापूर्वक कार्य करना होगा।

हमारे द्वारा पूर्व में हासिल किए गए उत्पादन लक्ष्य को देखते हुए विगत दो वर्षों से हमें बढ़ा हुआ उत्पादन लक्ष्य दिया जा रहा है। जिस समर्पण भाव से यहाँ कार्य किया जा रहा है उसे देखते हुए यह लक्ष्य ज्यादा बड़ा नहीं हैं तथा आप सभी में मौजूद मूल्यवान गुणों के बलबूते पर हम निश्चित ही इस बढ़े हुए उत्पादन लक्ष्य को तय समय-सीमा में हासिल करे लेंगे एवं उत्पादन का नया कीर्तिमान बनाएंगे।

गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के साथ ही इस मुद्रणालय के कर्मचारियों में नवीन तकनीकों को अपनाने और नवाचार करने की इच्छाशक्ति हमेशा से ही रही है जिसके फलस्वरुप इस वर्ष हमें भारतीय उद्योग महासंघ सीआईआई द्वारा श्रेष्ठ नवोन्मेषी कंपनी और विशिष्ट उत्पाद श्रेणी में दो पुरस्कार प्रदान किए गए हैं। साथ ही हमे बेहतर संरक्षा के लिए भी राज्यस्तरीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। राजभाषा के क्षेत्र में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, देवास द्वारा इस मुद्रणालय को प्रथम पुरस्कार प्राप्त से नवाजा गया है यह सभी पुरस्कार आप सभी की कार्य के प्रति समर्पण एवं जीवटता को दर्शाते हैं।

इसी मुद्रणालय का एक अंग स्याही कारखाना भी है जिसका हाल ही में नवीनीकरण किया गया है। अब इसकी उत्पादन क्षमता 1500 मेट्रिक टन प्रतिवर्ष हो गई है। इस वर्ष में यहाँ भी स्याही के उत्पादन में कीर्तिमान रचा जायेगा। यहाँ कार्यरत टीम उत्कृष्ट स्याही निर्माण के लिए कटिबद्ध है। अब इसने विदेश में भी स्याही आपूर्ति की ओर एक कदम बढ़ाया है और मुझे पूरी उम्मीद है कि आने वाले वर्षों में स्याही की आपूर्ति विदेश में भी होने लगेगी।

बैंक नोटों के उत्पादन के साथ ही प्रतिभूति स्याही के निर्माण का कार्य अतिविशिष्ट श्रेणी में आता है। अतः इन कार्यों को करने के लिए सुरक्षा के साथ ही संरक्षा का ध्यान रखना जरुरी है। उत्पादन और संरक्षा एक दूसरे के पूरक होते हैं।

वर्तमान में नोटों की मांग को देखते हुए हमारा भविष्य सुरक्षित है। मगर आने वाले वर्षों में लेन-देन के लिए आधुनिक तकनीक का उपयोग होने से नोटों की मांग घटना सुनिश्चित है। अतः हमें इस बारे में भी सोचना होगा कि यहाँ उपलब्ध संसाधनों का उपयोग अन्य क्षेत्रों में कैसे करना है जिससे हम अपना अस्तित्व बनाए रखें। हमें विदेशी मुद्रा का उत्पादन करने के बारे में भी पहल करना होगी और यहाँ उपलब्ध संसाधनों को इस हेतु तैयार करना होगा।

इस मुद्रणालय की अभी तक की उपलब्धियों को देखते हुए मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी इसी समर्पण भाव, निष्ठा और कार्यकुशलता से कार्य करते हुए आप सभी इसका नाम शिखर पर रखने में कामयाब होंगे।

आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ

(राजेश बंसल)
मुख्य महाप्रबंधक

अखंड भारत की अखंड मुद्रा

अनुक्रमणिका

वर्ष- 39, जनवरी 2020

राजभाषा पत्रिका
बैंक नोट मुद्रणालय,
देवास (म.प्र.)

संरक्षक
श्री राजेश बंसल
मुख्य महाप्रबंधक

सह संरक्षक
श्री एस. महापात्र
अपर महाप्रबंधक

प्रकाशक
श्री व्ही.जी. महरिया
उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादक
संजय भावसार
उपप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल
हिमांशु शुक्ल
उपप्रबंधक (तकनीकी)

पी. के. मुदगल
उप प्रबंधक (तकनीकी)

मुख्य पृष्ठ परिकल्पना
संजय भावसार
उपप्रबंधक (राजभाषा)

संपादकीय	02
प्रगति की राह पर स्याही कारखाना	03
नवीन स्याही कारखाना राष्ट्र को समर्पित	03
चिंतन चौपाल	05
सकारात्मक विचारों का महत्व	05
राजभाषा हिंदी और सूचना प्रौद्योगिकी	06
जीवन में राष्ट्रीयता का महत्व	09
घर में मौजूद है अस्थमा का इलाज	10
बेटियाँ	10
क्या यही आज़ादी है?	11
भजन	11
बेटे भी घर छोड़ कर जाते हैं	12
समय	12
आहार और स्वास्थ्य	13
सफर की हद है यहाँ तक का कुछ निशान रहे	13
उत्पादकता	14
नवनिर्मित स्याही कारखाना	15
डॉक्टर इस धरती पर ईश्वर का दूसरा स्वरूप	16
स्याही कारखाना मेक इन इंडिया की ओर बढ़ते कदम	17
दोहे	18
नया घर	18
क्या आप जानते है	19
कोशिश कर	19
मेडिकल एमेरजेंसी	20
मछलीघर	22
राष्ट्रीय एकता	22
अनमोल वचन	23
समय चक्र	23
नव की ओर	23
दो महीने	24
गीता सार	24
घर पूछता है	25
जाड़े की रात	25
मेरी दुनिया	25
अर्द्धवार्षिक बैठक सम्पन्न	26
बैंक नोट प्रेस को मिला संरक्षा अवार्ड	27
परीक्षण शिविर सम्पन्न	28
बी एन पी द्वारा कवड़िया ...	29
बीएनपी द्वारा सतर्कता जागरुकता सप्ताह	30
ऑर्डर का वितरण कार्यक्रम आयोजित	31
हर बार	32
हाँ तू मेरी परछाई है	32
रूपये का इतिहास	32
सेवा निवृत्त सम्मान समारोह	33
विविध गतिविधियों की कहानी... चित्रों की जुबानी	34
बृहस्पतिवार का व्रत	36

प्रकाशित सामग्री से प्रबंध तंत्र, प्रकाशक तथा संपादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

संपादकीय

कहते हैं नाम में क्या रखा है, यद्यपि नाम में तो कुछ नहीं रखा है उसका जो काम है, वह काम उसे करना चाहिए। गुलाब का नाम चाहे जो हो पर उसका कार्य सुगंध विसरित करना है, जो वह करता भी है । पर नाम यदि अर्थवान हो, कार्यक्षेत्र से सुसंगत हो तो सोने पर सुहागा हो जाता है । इसी संबंध में आपको यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि मुद्रणालय की राजभाषा पत्रिका का नाम परिवर्तित कर इस अंक से मुद्रापथ कर दिया गया है । कारण सिर्फ इतना है कि पूर्व का नाम बैनोप्रिन जोकि मुद्रणालय के तत्कालीन टेलीग्राम को इंगित करता था, अब समाप्त हो गया है और मुद्रणालय से बाहर के पाठक भी नाम के अर्थ को लेकर भ्रांत रहते थे और नाम के साथ समरसता स्थापित नहीं कर पाते थे और नाम परिवर्तन का संकेत भी साथ ही देते थे । बदलते परिवेश और सुसंगतता को देखते हुए यह नाम परिवर्तित किया गया है । आशा है यह नया नाम आपको अवश्य ही पसंद आएगा । अस्तु ,

किसी भी गृह पत्रिका का कार्य उसके संस्थान के कार्यक्षेत्र, रचनाकारों और पाठकों की भावना के साथ तादात्म्यता स्थापित करने के साथ शाब्दिक अभिव्यक्ति को मुखरित करना होता है और मुद्रणालय की गृह पत्रिका इसका सर्वोत्तम प्रयास भी कर रही है । इन्हीं प्रयासों की श्रृंखला में हमने इस अंक को नवीन स्थापित प्रतिभूति स्याही कारख़ाना को समर्पित किया है जिसमें अधिकाधिक रचनाकार स्याही कारखाने के है जिन्होंने अपने कार्यक्षेत्र से संबन्धित आलेखों के माध्यम से कई अच्छी जानकारियाँ हमें उपलब्ध करवाई है । साथ ही इतर रचनाएँ भी आप इसमें पाएंगे जिसमें राजभाषा हिन्दी के तकनीकी और अन्य वृहद ज्ञान को भी अपने में समेट रही है । यह वर्ष मुद्रणालय के लिए कई उल्लेखनीय गतिविधियों और विशिष्ट व्यक्तियों के आगमन का रहा, उन्हें भी हमने इस अंक में समेटने का प्रयत्न किया है ।

मुद्रापथ के इस अंक को आपके समक्ष आकर्षक और पठनीय रूप मे लाने में सदैव की भांति मुख्य महाप्रबंधक महोदय का उदार और बहुमुखी चिंतन की भूमिका रही है। अपर महाप्रबंधक द्वय, अन्य वरिष्ठ और साथी अधिकारियों के साथ राजभाषा प्रगति के प्रति सक्रिय रचनाकार भी हमेशा अनन्य भूमिका निभाते आ रहे हैं । मुद्रापथ टीम आप सभी की आभारी है ।

आपके अनवरत सहयोग और प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में –

(संजय भावसार)
संपादक

प्रगति की राह पर स्याही कारखाना

एस. महापात्रा
अपर महाप्रबंधक

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास परिसर में प्रतिभूति स्याही कारखाना का एक नवीन रूप में नए भवन में कार्य निष्पादन का शुभारंभ हुआ है। यह फैक्ट्री 15 मार्च 2019 को मान्यवर श्री एस.सी गर्ग तत्कालीन वित्त सचिव, वित्त मंत्रालय, के मार्गदर्शन में देश को समर्पित की गई है। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड के शीर्ष प्रबंधन की दूर दृष्टि एवं प्रभावी सोच को जीवन्त रूप देने में हम सक्षम रहे जो आने वाले दशकों तक निरंतर देश की सेवा में तत्पर रहेगी। स्याही कारखाना में कार्यरत प्रत्येक व्यक्ति (स्थायी एवं अस्थायी) बधाई का पात्र है। सीमित संसाधन एवं मानव शक्ति के साथ वैज्ञानिक सोच रखने वाले कई कार्मिक अदभूत कार्य का परिचय देते है जिसकी झलक यहां आने वाले प्रत्येक आगंतुक अपने दृष्टि से अनुभव करते हैं।

आज इस नये नवीन कारखाना से निर्मित/उत्पादित स्याही बैंक नोट मुद्रणालय-देवास, चलार्थ पत्र मुद्रणालय-नासिक, आई.एस.पी-नासिक, एस.पी.पी-हैदराबाद, एस.पी.एम-होशंगाबाद के साथ-साथ बीआरबीएनएमपीएल के दोनो प्रेस मैसूर और सालबोनी को निरंतर आपूर्ति करता है।

यहां के कर्मठ साथी गण के हांथों से गुजरी हुए स्याहियां कोरे कागज को नोटों में तब्दील करने के साथ विभिन्न मूल्यो के स्टैम्प, पासपोर्ट, वीजा इत्यादि अनेकों प्रतिभूति दस्तावेज को नए रूप में रूपान्तरित करते है। स्याही कारखाना की उपलब्धियों को समय-समय पर अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, निदेशक तथा अन्य उच्च अधिकारियों तथा अन्य संस्थानो द्वारा सराहा जाता है। स्याही कारखाना की आगामी प्रगति के लिए भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड ने जो सपने संजोए है उसको साकार रूप देने में हम सब को कन्धे से कन्धा मिलाकर ऐसे ही प्रयास करते रहना होगा।

स्याही की गुणवत्ता के साथ-साथ उसके सुरक्षा मानकों का उत्तरोत्तर विकास और विस्तार होना समय की मांग है । भारतीय मुद्रा का आधुनिकीकरण, ई-ट्राजेक्शन का विस्तार एवं कैशलेस ट्रॉन्जेक्शन की गति बढ़ती जा रही है। अतः निश्चित रूप से आने

नवीन स्याही कारखाना राष्ट्र को समर्पित

दिनांक 15 मार्च 2019 को बीएनपी फैक्ट्री परिसर में प्रतिभूति स्याही कारखाना राष्ट्र को समर्पित किया गया । इस अत्याधुनिक स्याही कारखाने का उद्घाटन मा. श्री सुभाष चन्द्र गर्ग, वित्त सचिव, भारत सरकार के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर निगम मुख्यालय से अतिथि के रुप में सुश्री तृप्ति पात्रा घोष, सीएमडी, श्री अजय श्रीवास्तव, निदेशक (तक.), श्री एस.के. सिन्हा, निदेशक (मा.सं.) और साथ ही श्री राजेश बंसल, महाप्रबंधक, बीएनपी एवं अन्य अधिकारी गण, स्टॉफ, यूनियन पदाधिकारी भी उपस्थित थे ।

वाले समय में पारंपरिक नोटों की कटौती की संभावना है। ऐसे समय में स्याहियों की मांग में कमी होने की संभावना बनी रहती है। इसी को देखते हुए हमको स्याही की वैराईटी में विस्तार करना होगा नये–नये आयाम ढूढने होंगे एवं निर्यात को विकसित करना होगा।

आज के इस प्रतिस्पर्धा के दौर में स्याही कारखाना की उल्लेखनीय उपलब्धियों को भारत सरकार के संस्थान सी.आई.आई द्वारा सराहा गया है। हम सभी बीएनपी परिवार के लोगो के अथक प्रयास से आज बीएनपी देवास 25 शीर्ष कंपनियों में से एक नवोन्मेषी कंपनी का स्थान प्राप्त कर पाई है।

जिस नवोन्मेषण को आज सम्मानित किया गया है। यह एक व्यापककार्य दक्षता का विकास होना है जो कि मेक इन इंडिया के अन्तर्गत शामिल किया गया है। अगर संक्षिप्त रूप में कहा जाए तो नई स्याही का घरेलू/स्वदेशी निर्माण करंसी स्याही नवीन सूत्रीकरण में पैक करना तथा 200 लिटर क्षमता वाले ड्रम में सप्लाई करना एवं उत्कीर्ण/इन्टैगलियो मशीन के साथ जोड़ कर 200 लीटर पम्प से सफलतापूर्वक स्याही हस्तांतरण करने के लिए एक घरेलू स्याही हस्तांतरण पंप का विकास होना, बीएनपी की तथा स्याही कारखानों की उत्पाद क्षमता में वृद्धि होना कार्य प्रणाली में सुधार होने का सुखद संकेत हैं।

आज यह विकास की नई दिशा एवं नवोन्मेषण कंपनी की दौड़ में विशेष उत्पाद बनाने के क्षेत्र में सबसे आगे खड़ा है। इस प्रक्रिया के विकास होने से आने वाले भविष्य में इसका लाभ निरंतर मिलता रहेगा।

बिन्दुवार विवरण निम्नानुसार है –

नवोन्मेषण– 1 विमुद्रीकरण के पश्चात अपने केमिस्ट एवं वैज्ञानिकों के द्वारा नयी सीरिज के नोटों के लिए स्याही का विकास करना। विमुद्रीकरण के पश्चात बैंक नोट की मांग व्यापक रूप से बढ़ गई थी । नयी मुद्रा के लिए स्वदेशी कच्चा माल का उपयोग कर नई स्याही को विकसित कर विभिन्न मुद्रा जैसे 500/– रूपये, 200/– रूपये, 100/– रूपये, 50/– रूपये, 20/– रूपये, आईएसआरए स्याही इत्यादि को प्रिंट किया गया।

लाभ – समय एवं पैसे की बचत, घरेलू तकनीकी का विकास, स्याही के लागत में बचत, आयात पर निर्भरता / बाह्य आपूर्तिकर्ता पर निर्भरता कम हो गई ।

नवोन्मेषण– 2 ग्रेवीमेट्रीक फिलिंग प्रक्रिया का विकास स्याही भरने की प्रक्रिया में यह एक घरेलू विकल्प है एवं स्वदेशी तकनीकी पर आधारित है। विदेशी मशीनों की कीमत 1.6 करोड़ रूपये की तुलना में स्वदेशी मशीन की लागत 14 लाख रूपये है।

लाभ – स्थानीय सामग्री से 100 प्रतिशत स्वदेशी तकनीकी का विकास, मशीनो की लागत में बचत, आयात पर निर्भरता / वाह्य आपूर्तिकर्ता पर निर्भरता कम हो गई ।

नवोन्मेषण– 3 इन्टैग्लियों मशीन के लिए उच्च क्षमता वाले स्याही ट्रांस्फर पंप का विकास विदेशी मशीनों द्वारा 20 किलो स्याही के डब्बे भरे जाते थे जिसप्रतिस्थापित कर स्वदेशी मशीनो के जरिए 200 किलो के डब्बे भरे जाने लगे। विदेशी मशीन जिसकी कीमत 25–30 लाख रूपये है कि तुलना में स्वदेशी मशीन की कीमत 06 लाख रूपये है। इस तकनीकी को चलार्थ पत्र मुद्रणालय, नासिक ने भी परिवर्तन एवं विकास के लिए अपनाया है।

लाभ – इस परियोजना के लाभ व्यापक और विस्तृत है जैसे– पर्यावरण हितैषी, पैकिंग मूल्य में अधिक बचत, श्रमशक्ति, व्यवस्थित रख–रखाव, उत्पादन में वृद्धि एवं 100 प्रतिशत स्वदेशी सामग्री का उपयोग।

भविष्य की योजना– कंपनी का ध्येय/दृष्टि घरेलू एवं स्वदेशी तकनीकी विकसित करना है जिससे देश के बैंक नोट, पासपोर्ट एवं अन्य प्रतिभूति दस्तावेजों का सुरक्षा मानक बढ़ाया जा सके एवं इसके साथ साथ कंपनी का उद्देश्य नये तकनीकी एवं नवत्थान के साथ प्रतिभूति दस्तावेज जैसे– प्रतिभूति स्याही, बैंक नोट, प्रतिभूति कागज इत्यादि को अन्य देशो में निर्यात करना भी है।

चिंतन चौपाल

कुछ कहना चाहते हैं आपके अपने ... सुनिए धैर्य से

संजय भावसार
उप प्रबन्धक(शाखा)

विक्टर फ्रेंकल बीसवीं शताब्दी के एक महान मनोचिकित्सक और न्यूरोलॉजिस्ट थे जिन्होने नाजी जर्मनी के डेथ केंप में तीन वर्ष बिताए थे और वहाँ से वह चमत्कारी रूप से बच कर निकल आए थे। उनकी जीवन रूपांतरकारी बेस्ट सेलर पुस्तक Man's Search For Meaning (जीवन के अर्थों की तलाश में मनुष्य) प्रत्येक व्यक्ति को अवश्य पढना चाहिए।

फ्रेंकल एक किस्सा यूं सुनाते है कि एक बार अर्ध रात्रि में उनके पास उन्हें यह सूचित करने के लिए एक महिला का फोन आया कि अब वह आत्महत्या करने जा रही है। फ्रेंकल ने फोन पर ही डिप्रेशन पर और उसे क्यों जीना चाहिए पर लंबी बातें की और उसकी हर बात को गहराई में जाकर सुनते– समझते और समझाते रहें कि उसे क्यों जीना चाहिए। अंततः उस महिला ने वादा किया कि वह अब आत्महत्या नहीं करेगी। बाद में जब वह उससे मिले और उससे पूछा कि उनकी किस बात से प्रेरित होकर उसने आत्महत्या का विचार त्याग दिया। उसने जवाब दिया आपकी किसी भी बात से प्रेरित होकर मैंने यह विचार नहीं त्याग आश्चर्य से भरकर फ्रेंकल ने उससे पुनः प्रतिप्रश्न किया कि फिर ऐसा क्या था जिसने आपको वो विचार त्यागने को प्रेरित किया।

इस पर उसने बड़ी ही सरलता से कहा कि आपने आधी रात में मेरी पीड़ा और मनोव्यथा को अच्छे से सुना और मुझसे संवाद किया सिर्फ इसी कारण मैं वह विचार त्यागने को प्रेरित हुई।

मुद्दे की बात यह है कि संसार का प्रत्येक व्यक्ति अपने अनुभवों से, विविध रिश्तों से उपजी कही –अनकही, अच्छी –बुरी भावनाओं और मनोव्यथा को किसी अपने के साथ बांटना चाहता है, वह तलाश में है कि कोई तो उसे अच्छी तरह सुने ताकि जो भी उसके भीतर है अच्छा –बुरा है उससे मुक्त होकर वह अपने अस्तित्व को हल्का कर भीतर पनप रहे अवसाद, कुंठा, चिंता, घुटन से मुक्ति पा सके। शताब्दी के सबसे सुविधामय दौर की यह बड़ी विडम्बना है कि हम अपने सबसे निकटस्थ प्रियजन, अपने मित्रों, बच्चों, परिजनों को गुणवत्तापूर्ण तरीके से सुन नहीं पा रहे हैं, उनके साथ महज रोजमर्रा की गतिविधियों और आवश्यकताओं संबंधी सूचनाओं को ही सुन रहे हैं।

सूचना और प्रोद्यौगिकी के उत्कर्ष के पश्चात कृत्रिम बुद्धिमता (Rtificial Intelligence) और रोबोटमयी होने जा रही इस शताब्दी में अपने परिजनों को, अपने प्रियजनों को, अपने बच्चों की अनकही आवाज़ को, उनकी भावनाओं को, उनकी मनोव्यथा को पूर्ण शांति और तादात्म्यता के साथ सिर्फ सुनें। यहीं उनके लिए हमारा सबसे बड़ा उपहार होगा। हमारे इसी कदम से उनका भावनात्मक संतुलन बना रहेगा जो उनके जीवन में आवरण का कार्य कर कठिनाइयों से उनकी रक्षा का कार्य करेगा और उन्हें बहकने–भटकने से रोकेगा।

सकारात्मक विचारो का महत्व

मुकेश मिश्रा (संकलित)
तक.(स्याही कारखाना)

हम हमेशा कुछ न कुछ सोचते रहते है, सकारात्मक या नकारात्मक, काम का या फालतू बिना ये जाने की इन सब का हमारे शरीर एवं स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है। इसके विपरीत नकारात्मक विचारो से यह दिन प्रतिदिन खराब होने लगता है।

विचार चिंता वाला हो या आनंद वाला वह शरीर एवं मन पर प्रभाव अवश्य ही डालेगा। जब भी कोई विचार हम मन मे लाते हैं तो वह तुरंत ही अपना प्रभाव डालना शुरू कर देता है एवं शरीर उसी विचार के अनुसार अपने आप को ढाल लेता है और प्रतिक्रिया करता है।

विचार किस प्रकार हमे प्रभावित करते है एक उदाहरण द्वारा समझ सकते है। एक पैथोलोजी लैब मे दो व्यक्तियों के ब्लड का सैंपल लाया जाता है, इसमे से एक को ब्लड केंसर है तथा दूसरा सामान्य बुखार का। त्रुटिवश सेंपल बदल जाते है, रिपोर्ट की अदला बदली हो जाती है। अब इन दोनों व्यक्तियों की क्या हालत होगी आप स्वयं समझ सकते है।

इसलिए यदि हम सकारात्मक विचार अपने मन मे लाये तो वह स्वस्थ वर्धक होगा एवं हमारे ऊपर अच्छा प्रभाव डालेगा, जिससे हम अपने जीवन मे उन्नति कर सकेंगे। सकारात्मक विचारो के द्वारा हम कोई भी लक्ष्य प्राप्त कर सकते है।

राजभाषा हिंदी और सूचना प्रौद्योगिकी

नीलू द्विवेदी
प्रबंधक (आई.टी.)

वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है । सूचना विस्फोट इसका बीजमंत्र है। आज सारा संसार सूचनाओं के निरंतर प्रेषण पर टिका है । यह सूचना प्रौद्योगिकी एक विशाल शक्ति के रूप में उभर कर आई है । नए सहस्त्रक में इसका आश्चर्यजनक विकास हुआ है । इसकी परिधि व्यापक, विशाल और विस्तृत हुई है । सूचनाओं के संकलन से लेकर उसके प्रेषण तक की क्रिया में आमूलचूल परिवर्तन हुआ है। कंप्यूटर, इंटरनेट, ई-मेल, प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, टेलिप्रिंटर, फ़ैक्स, मोबाईल, एस एम एस, एम एम एस आदि साधनों के बलबूते पर सूचना प्रौद्योगिकी ने सशक्त रूप धारण कर लिया है । इसमें सूचनाओं का उत्पादन, विश्लेषण, भंडारण, संचरण नई तकनीक के आधार पर हो रहा है । इसकी विकास प्रक्रिया दिन-प्रतिदिन तीव्रतर हो रही है ।

सूचना विस्फोट के इस युग में हिंदी भाषा नई दिशा की ओर अग्रसर हो रही है। नए अनुसंधान के अनुसार बोलनेवालों की दृष्टि से हिंदी विश्व स्तर पर प्रथम भाषा का दर्जा पा चुकी है। जाननेवालों की संख्या अधिक होने के कारण हिंदी अब संचार, प्रचार-प्रसार की भाषा बन रही है । भारत सरकार के राजभाषा विभाग ने अब सरकारी दफ्तरों में प्रयुक्त होनेवाली हिंदी को बदलने के लिए अवश्य प्रयास तेज कर दिए हैं । दफ्तरों में इस्तेमाल होने वाले हिंदी कठिन शब्दों की जगह उर्दू, फ़ारसी, सामान्य हिंदी और अँग्रेज़ी के शब्दों का उपयोग करने के निर्देश दिए हैं। जनसामान्य तक ज्ञान और सूचना पहुँचाने की दृष्टि से हिंदी को सहज, सरल और प्रेषणीय बनाने की ज़ोरदार पहल हो रही है।

कंप्यूटर के कारण आज सूचनाओं का संकलन, विश्लेषण, भंडारण और संप्रेषण आसान हो गया है । हिंदी भाषा का प्रयोग व्यापक रूप में कंप्यूटर पर हो रहा है । टंकण, मुद्रण और कंप्यूटर का नियंत्रण हिंदी में सहज संभव हो रहा है । हिंदी में वर्तनी संशोधक विकसित हुआ है और हो रहा है । इंटरनेट और ई-मेल भेजने और प्राप्त करने की सुविधा हिंदी में उपलब्ध हो गयी है । हिंदी भाषा में आज अनगिनत वेबसाईट उपलब्ध हैं । इन वेबसाईटों पर हिंदी की समस्त विधाएँ , पुस्तकें, पत्रिकाएँ और ब्लॉग प्रस्तुत हैं । फेसबुक में भी अब हिंदी का प्रयोग हो रहा है । वर्तमान समय में हिंदी की ऑनलाईन पुस्तकों का प्रकाशन, विज्ञापन तथा ख़रीद इंटरनेट के माध्यम से हो रही है । इंटरनेट के माध्यम से आज हिंदी भाषा को किसी भी स्थान से सीखा जा सकता है । विश्व के

किसी भी कोने में हिंदी की किताबों, पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ा जा सकता है और उनका संपादन, लेखन भी किया जा सकता है । हिंदी अनुवाद की दृष्टि से भी इंटरनेट महत्त्वपूर्ण बन गया है । विविध भाषाओं से हिंदी में तथा अनेक लिपियों को देवनागरी लिपि में परिवर्तित करने की सुविधा इंटरनेट मुहैया कर रहा है। अनेक हिंदी शब्द कोश और विश्वकोश इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। विकीपीडिया के प्रारंभ से तो हिंदी की अकूत सामग्री इंटरनेट पर प्राप्त हो रही है । इससे एक ओर हिंदी का विकास, प्रचार-प्रसार हो रहा है तो दूसरी ओर हिंदी व्यापक रूप में संप्रेषण की भाषा बन रही है ।

सूचना क्रांति के इस दौर में हिंदी भाषा संचार की भाषा बन गई है। जनसंचार के माध्यमों ने हिंदी को व्यापक भूभाग पर फैलाया है । संचार माध्यमों के कारण हिंदी बोलनेवालों की तथा ग्रहण करनेवालों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है । कंप्यूटर, इंटरनेट, ई-मेल, फ़ैक्स, पेजर, उपग्रह इन नव इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है । टी.वी, फ़िल्म और एफ. एम. रेडियो की भाषा के रूप में हिंदी को पहचान मिल रही है । हिंदी भाषा का अंतर्राष्ट्रीय रूप बनाने में इन संचार माध्यमों का बहुत बड़ा योगदान है ।

आज टी.वी. पर लगभग दो सौ चैनल हैं जिनमें अधिकांश हिंदी के हैं । दूरदर्शन तो हिंदी के प्रचार-प्रसार वाला सशक्त माध्यम सिद्ध हुआ है । आज हिंदी की बढती लोकप्रियता के कारण स्मॉलवंडर जैसे विदेशी कार्यक्रम हिंदी में डब हो रहे हैं । समाचार, डिस्कवरी, नेशनल ज्योग्राफी और कार्टून चैनल अपना प्रसारण हिंदी में कर रहे हैं । टी. वी. से प्रसारित होनेवाले हिंदी धारावाहिक विश्व में लोकप्रिय हो रहे हैं । ये विशेष रूप से हिंदी भाषा को लोकप्रिय बनाने में बहुत सफल रहे हैं। इससे हिंदी की शब्द संपदा बढ रही है । समाचार, लेखन वार्ता, कथा, साक्षात्कार आदि का महत्त्व ब रहा है । हिंदी की भाषिक व लिखित समृद्धि हो रही है । हिंदी अनुवाद की भाषा बनकर पूरे विश्व को जोड़ रही है । हिंदी भाषा की शैली व प्रस्तुति में परिवर्तन हो रहा है। उद्योगपति अपने बाज़ार की संभावना को देखकर हिंदी को प्रयोग में ला रहे हैं । इससे बहुतों को हिंदी के बलबूते पर रोज़ी रोटी मिल रही है। हिंदी अब रोज़गार की भाषा बन गई है ।

जनसंचार के क्षेत्र में हिंदी नई ढली हुई करेंसी की तरह आकर्षक और उपयोगी बन गयी है। इसी के चलते इसका प्रचलन ब रहा है । सारे टी.वी. चैनलों को यह बात समझ में आ गई है कि यदि हिंदी का सहारा नहीं लिया तो टिक नहीं पाएँगे । विज्ञापन और समाचार जगत से जुड़े लोगों का मानना यह है कि एक बहुत बड़ा दर्शक वर्ग है जो अपनी बात हिंदी में सुनता-समझता है और चाहता भी है । इस कारण टी. वी. पर हिंदी चल रही है और उसका विस्तार हो रहा है ।

प्रभावी विद्युतीय संचार माध्यम फ़िल्म ने हिंदी की स्थिति को विश्व स्तर पर मज़बूत किया है । फ़िल्म उत्पादन में भारत का पूरे विश्व में दूसरा स्थान रहा है । इन फ़िल्मों में अधिकांश फ़िल्में हिंदी की होती हैं । अंतरर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी फ़िल्म उद्योग को 'बॉलिवुड' के नाम से जाना जाता है। बॉलीवुड की 'लगान' जैसी हिंदी फ़िल्में प्रतियोगिता में शामिल होना हिंदी की दृष्टि से सुखद है । 'दो आँखें बारह हाथ', ' शोले', 'अंकुर', 'प्रेम रोग', 'कामसूत्र', 'ख़ूबसूरत', 'चाँदनी', 'ज़ंजीर', 'बॉर्डर', 'तारे जमी पर' आदि हिंदी की अविस्मरणीय फ़िल्में हैं । इन फ़िल्मों ने हिंदी प्रेमी दिए हो या नहीं किंतु इस संचार माध्यम ने भारत वर्ष के साथ ही साथ पूरे विश्व में हिंदी को पहुँचाने का कार्य किया है ।

रेडियो ने अपना पुराना रूप बदल दिया है । एफ. एम. पर बजनेवाले गीत-संगीत से हिंदी का प्रचार प्रसार हो रहा है । हिंदी एफ. एम. के लोग दीवाने हो गए हैं । आकाशवाणी ने तो अपना अलग हिंदी प्रभाग -'समाचार व सूचना संग्रहण' के लिए प्रारंभ कर

दिया है । आकाशवाणी से प्रतिदिन इकतीस हिंदी समाचार बुलेटिन प्रसारित किए जाते हैं । जिनमें से छः तो अंतरराष्ट्रीय चैनल पर भी प्रसारित होते हैं। आकाशवाणी पर स्थानीय रंगत के साथ ही साथ हिंदी के ज्यादातर कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है ।

हिंदी के प्रति प्रिंट मीडिया भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है । प्रिंट मीडिया ने हिंदी को लिखित रूप दिया है । आज प्रिंट मीडिया का बहुत विस्तार हुआ है । सूचनाओं को लोगों तक पहुँचाने के लिए इसने इंटरनेट को अपनाया है । आज सर्वाधिक समाचार पत्र हिंदी में प्रकाशित हो रहे हैं और इन्हें इंटरनेट पर लना भी संभव हो गया है । हिंदी भाषा आज प्रिंट मीडिया में भी अपनी शब्द संपदा बढा रही है । नये शब्दों का निर्माण एवं वाक्य रचनाएँ, कई स्तरों पर भाषा को परिष्कृत व संस्कृत कर रही हैं ।

सूचना प्रौद्योगिकी के चलते हिंदी राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुँच गई है । इंटरनेट के साथ ही साथ वह अब मोबाईल और एस एम एस और एम एम एस की भाषा बन गई है। अपने उत्पादनों को लोगों तक पहुँचाने के लिए हिंदी विज्ञापन की प्रमुख भाषा बन गई है। इससे एक नई व्यावसायिक हिंदी प्रचलित हो रही है । विज्ञापनों के माध्यम से हिंदी घर-घर पहुँच रही है ।

सूचना क्रांति के प्रभाव से अब हिंदी की संरचना पूरी तरह से बदल गयी है । संचार माध्यमों के आधार पर हिंदी के नए-नए रूप बन रहे हैं । माध्यमों के अनुसार हिंदी में परिवर्तन हो रहा है । माध्यमों को प्रभावी रूप में अभिव्यक्त करने के लिए हिंदी ने अनेक कुशलताओं को प्राप्त कर लिया है । किंतु इससे हिंदी का रूप बदल गया है । उसमें कई भाषाओं के शब्दों का प्रयोग हो रहा है । अँग्रेज़ी का प्रयोग तो इतना बढ गया है कि हिंदी हिंग्लिश बन रही है । लेकिन हिंदी के विकास के लिए यह आवश्यक भी लग रहा है । क्यों कि अँग्रेज़ी ऑक्सफोर्ड शब्दकोष ने हिंदी के 'किसान', 'बंद', 'मज़दूर', 'धरना', 'गुरु' आदि शब्दों को अपनी डिक्शनरी में शामिल कर लिया है । सूचना प्रौद्योगिकी के युग में हिंदी के विकास हेतु हमें शुद्धतावाद की हठवादी भूमिका को छोड़ना पड़ेगा । नहीं तो शुद्धतावाद के लिए हठवादी भूमिका लेना हिंदी का गला घोटने के समान होगा।

हिंदी के सामने लिपि का प्रश्न भी निर्माण हो रहा है । हिंदी की अपनी लिपि देवनागरी है किंतु आज रोमन लिपि का प्रयोग हो रहा है। अर्थात् लोग हिंदी में बोल रहे हैं किंतु देवनागरी के स्थान पर रोमन लिपि का प्रयोग कर रहे हैं । हिंदी की लिपि में यह बदलाव सूचना प्रौद्योगिकी के कारण आया है जो नए अनुसंधान की माँग करता है ।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि सूचना प्रौद्योगिकी के कारण हिंदी का केवल भारत में ही नहीं तो विश्व में प्रचार-प्रसार हो रहा है । हिंदी अब कंप्यूटर, इंटरनेट, ई-मेल और जनसंचार माध्यमों की भाषा बन गई है । दूरदर्शन और टी.वी. के अनेक चैनल हिंदी को लोगों तक पहुँचा रहे हैं । हिंदी फ़िल्में भी यह भूमिका निभा रही हैं । प्रिंट मीडिया के कारण हिंदी का लिखित रूप अमर बन गया है । हिंदी भाषा अब अंतर्राष्ट्रीयता की ओर चल पड़ी है । वह अब रोज़गार और संचार की भाषा बन गई है । विज्ञान, चिकित्सा, व्यवस्थापन का ज्ञान अब हिंदी में आ चुका है । किंतु हिंदी के रूप में परिवर्तन हो रहा है । उसकी लिपि बदल रही है । 'टाइम्स न्यू रोमन' की तरह हिंदी में कोई वैश्विक फाँट तैयार नहीं हो रहा है । टंकण की दिक्कत के कारण लोग हिंदी के लिए रोमन लिपि का प्रयोग कर रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी से एक ओर हिंदी का विस्तार हुआ है तो दूसरी ओर उसका रूप परिवर्तित हो रहा है । किंतु हिंदी को राष्ट्रभाषा, विश्व भाषा और राष्ट्रसंघ की भाषा बनाने की दृष्टि से सूचना प्रौद्योगिकी का यह कार्य अनूठा है, इसमें कोई शक नहीं ।

जीवन मे राष्ट्रीयता का महत्व

हरीश चन्द्र लोधी
(तकनीशयन) स्या.कार.

राष्ट्र की परिभाषा के बारे मे भिन्न-भिन्न विचारकों ने भिन्न-भिन्न मत दिये है । किन्तु भारतीय लेखको को छोड़कर सभी देशों के लेखकों के विचार एक ही केंद्र बिन्दु को प्रकट करते हैं । जैसे कई विद्वानों के विचार है कि राष्ट्रीयता एक सामूहिक भाव है । एक प्रकार की साहचर्य भावना अथवा परस्परिक सहानुभूति है जो एक स्वदेश विशेष से संबन्धित है। इसका उद्भव सामान्य पैतृक स्मृतियो से होता है, चाहे वह महान कर्तव्य और गौरव की हो अथवा विपत्ति तथा कष्टो की । एक और विद्वान लिखते है राष्ट्र एक जन समुदाय है, जिसकी भाषा, साहित्य, आचार तथा भले-बुरे की चेतना सामान्य को और जो भौगोलिक एकता युक्त प्रदेश मे रहता हो इससे स्पष्ट होता है की राष्ट्र पाँच अवयवो से बनता है ।

1 भौगोलिक देश
2. जाति
3. धर्म
4. संस्कृति
5. भाषा

इन्ही सभी तत्वों को मिलाकर एक राष्ट्र बनता है। इन्ही पांचों अंगों की एकता दृढ करना राष्ट्रीयता है, जो इन पांचों अंगों की एकता को पक्का करता है उसे वही राष्ट्रीय है। राष्ट्रीयता की यही भारतीय विचारधारा है। इन पाँचो अवयवो का जीवन मे जो महत्व होगा, वही जीवन मे राष्ट्रीयता का भी महत्व होगा।

भौगोलिक देश- राष्ट्र बनाने मे देश की सबसे अधिक आवश्यकता है। प्रत्येक जाति के लिए, राष्ट्र के रूप में जीवन बिताने के लिए, यह इकाई सबसे अधिक महत्व रखती है। देश ऐसा होना चाहिए, जो भौगोलिक सीमाओं में आबद्ध हो। जिस जाति के पास अपना देश नहीं है, वह जाति अपनी संस्कृति, सभ्यता एवं भाषा खो देती है। जैसे यहूदी जाति ने अपने देश को खो दिया है। इसके साथ ही उन्होने अपनी राष्ट्रीयता को भी खो दिया था। पारसियों को लीजिये विधर्मियों के अत्याचारो से पीड़ित होकर वे अपने देश को छोड़ बैठे। अब उनके राष्ट्र बनाने के स्वप्न पूरे नहीं हो सकते। इसलिए सारे लोग अपने देश को बचाने के लिए तन, मन, धन सब कुछ अर्पित कर देते हैं।

जाति- जाति एक परंपरागत समाज को कहते हैं, जिसके आचार, भाषा तथा वैभव अथवा विनाश की स्मृतियां समान हो। जाति राष्ट्र का शरीर है, उसके पतन के साथ राष्ट्र की सत्ता लुप्त हो जाती है। तभी सारे देश अपनी भावना को उग्र बनाए का प्रयत्न करते हैं।

धर्म और संस्कृति- किसी भी जाति अथवा राष्ट्र को जीवित रखने के लिए धर्म और संस्कृति का होना आवश्यक है, भारतवर्ष के लिए तो विशेषतया क्योंकि भारत मे धर्म ही प्राणों के रूप काम करता है। सभी देशों में लोग धन खर्च करके अपने धर्म तथा अपनी संस्कृति को उन्नत करने करने का यत्न करते हैं। भारतवर्ष अपने धर्म तथा अपनी संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है इसलिए इसे संसार का गुरु माना जाता है।

भाषा - अपनी स्वतंत्रता भाषा के बिना कोई भी राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता । किसी देश की संस्कृति व उसका धर्म, भाषा मे ही छिपे रहते है इसलिए विदेशी सत्ता सबसे पहले पराजित देश की भाषा को नष्ट करती है। अपनी भाषा की रक्षा के लिए हमारे पूर्वजों ने अनेक प्रयत्न किए। तभी तो कहा था की प्राण निकलने को हो तो भी यावनी (विदेशी) भाषा को मत पड़ो। इसका यह अभिप्राय नहीं कि विदेशी भाषा पढ़ी ही न जाये, पर हमारी नीव अपनी संस्कृति व भाषा पर ही बननी चाहिए।

घर मे मौजूद है अस्थमा का इलाज

(संकलित)

नेहा बाजपेई
तक. (स्याही कारखाना)

श्वास नलिकाओ के सिकुड़ने और उनमे कफ जमा होने के कारण मरीज को सांस लेने मे कठिनाई होती है यह अवस्था अस्थमा कहलाती है।

1. लौंग - 5-6 लौंग को आधे गिलास पानी मे उबाले और एक चम्मच शहद मिला लें । इसे एक चम्मच दिन मे दो बार लें। इससे मरीज को सांस लेने में आसानी हो जाती है।
2. अदरक - अदरक से शरीर को अनेक फायदे होते हैं। अदरक, शहद और अनारदानों का समान भाग मे इस बना ले । इसे दिन को 2-3 बार ले सकते हैं।
3. अंजीर - अंजीर को रात मे भिगोकर रख दे। सुबह खाली पेट खाये । जिस पानी मे अंजीर रात भर भिगाई है, उस पानी को भी पी सकते है। इससे सांस लेने आसानी होगी ।
4. नीलगिरी का तैल - अस्थमा से राहत पाने के लिए नीलगिरी का तैल या यूकेलिप्टस आइल कारगर माना जाता है। एक कप उबले हुये पानी मे नीलगिरी के तैल की कुछ बूँदे मिला कर इसकी भाप लें, इससे नाक और श्वसननलिका की रुकावट दूर होगी और सांस आसानी से आ सकेगी ।
5. शहद - शहद को आयुर्वेद मे अमृत की संज्ञा दी गई है। दिन मे 3-4 बार शहद कुनकुने पानी के साथ ले। शहद को कुनकुने पानी मे घोलने पर जो सुगंध निकलेगी वह सूंघे । रात को सोने से पहले शहद के साथ दालचीनी का आधा चम्मच मिला कर ले।
6. आंवला - आंवले को कुचलकर उसका बीज निकाल ले। कलियों को कुचलकर उसमे शहद मिला ले। इसे दिन मे दो बार ले।
7. हल्दी का दूध - रात को सोते समय हल्दी का दूध गर्म करके लेना, अस्थमा के मरीजो को चैन की नींद लेने के लिए पर्याप्त होता है।

सावधानियां -

1. अस्थमा के रोगी को दिन में सोना नहीं चाहिए।
2. ठंड से बचने के लिए हर समय शरीर पर पर्याप्त वस्त्र पहनना चाहिए ताकि जुकाम न हो।
3. अस्थमा के रोगी को भरपेट खाने से बचना चाहिए।
4. चावल, शक्कर, दही से परहेज करना चाहिए।
5. भोजन के साथ पानी न पिये।
6. हमेशा एक इन्हेलर अथवा नीलगिरी के तैल मे डुबाया हुआ रुमाल साथ मे रखना चाहिए ताकि जरूरत पड़ने पर तत्काल इस्तेमाल किया जा सके।

बेटियाँ

सुरेन्द्र मेहरा
(तक.)

माँ, देख री माँ बदली हुई जवान
अब तो यह बाबुल के घर मे
दो दिन की मेहमान, माँ .....
धूम धाम से बन बाराती
बादल घिर घिर आएंगे
किसी सलोने बादल के संग
इसका ब्याह रचाएंगे
ले जाएँगे दुल्हनिया, वो ले जाएँगे
माँ इसकी रो देगी छम छम
कर बिटिया का दान ।।

माँ देख री माँ
देख बुरा मत मान
ओ माँ, देख बुरा मत मान
जियरा चाहे उड़ू गगन मे
तोड़ के तारे लाऊं मई
चाँद के झूले मे जा बैठू
झूला खूब झुलाऊ मे
देख घाटा सावन की
दिल मे उठते है तूफान
माँ देख रे माँ, बती हुई जवान

बीच बज़रिआ मोहे रोके सिपहिया
बरछी कटारी निकाल
बारछी से बरछी लड़ गई रे
कैसे जाऊ ससुराल ।।

सुश्री स्नेहा आर्य पोद्दार
फोरेमेन (स्याही कारखाना)

क्या यही आज़ादी है?

(स्वरचित कविता)
(न.रा.का.स. मे हिन्दी पखवाड़ा 2018 मे प्रथम पुरस्कार प्राप्त)

अभिव्यक्ति है ये भारत के उस पराधीन वर्ग की
जो ना कभी आज़ाद था, न कभी जिसे आज़ादी मिलेगी।
मैं बात करती हूँ उनकी जो अब तक बेड़ियो से निकल सकी।
दुपट्टा तन पर होना जरूरी, नज़रें नीची होना जरूरी
आवाज़ ऊंची नहीं, हम मंदिर मस्जिद मे सुरक्षित नहीं
क्या यही आज़ादी है ...
अनुपात बढाकर बढाया है। यौन हिंसाओं का अनुपात
कुत्ते के जैसे जीभ हिलाता है हमे बताता है हमारी औकात
क्या यही आज़ादी है ...
जींस टी-शर्ट पहनना अश्लीलता दर्शाता है
पर मुझे तो यहाँ कोई भी धोती में नज़र नहीं आता है।
फिर कैसे ये निश्चित कर दिया जाता है -2
की लड़की अगर साड़ी ही पहने तो वो सीता है
क्या यही आज़ादी है ...
बाज़ारों में, मेले में सिमट कर चलना होता है
वरना कोई मनचला कोई गंदी हरकत कर जाता है।
रात को 8 बजे से पहले घर आना होता है
देर हो गई है सोचकर माँ बाप का कलेजा मुंह को आता है
क्या यही आज़ादी है ...
ज्यादा खिलखिलाए मित्रों के साथ तो नाम के साथ
आवारा बदचलन का विशेषण लग जाता है
झगड़े अपने अधिकार के लिए तो लड़की हाथ से निकल गई
का ताना मारा जाता है क्या यही आज़ादी है ...
क्षण - क्षण पद पद पर हम अलग है हम कमजोर है हम निर्भर है
ये अनुभव करवाया जाता है
तुन दीन हो तुम क्षीण हो तुम काबिल नहीं हो
ये अंतर समझाया जाता है क्या यही आज़ादी है ...
और बराबरी के नाम पर पीछे कर दिया जाता है
मंदिर मे पंडित, मस्जिद मे काजी बन कर वो इतराना
है क्यूँ ? क्या यही आज़ादी है ...
क्या लड़की ये टैग लगा कर घूमे की ये मेरा भाई है
ये मेरा मित्र है क्यूँ ?
क्या लड़की ये टैग लगाकर बाहर निकले, आज मुझे
कुछ मत करना, मैं अकेली हूँ और मेरे साथ
कोई पुरुष मेरी सुरक्षा के लिए नहीं है क्यूँ ?
क्या यही आज़ादी है ...
आज़ादी के सही मायने नारी वर्ग के लिए
तब ही सार्थक होंगे जब एक पुरुष और एक महिला को
समान नजरों से देखा जाएगा
वरना भारत से यही पुकार आती रहेगी
क्या यही आज़ादी है ...

भजन

आओ तो आओ हरी
किस विधि से देर करी
सभा है भरी, और भीर पड़ी
आओ तो आओ ....
पति मोहे हारी, ये न बिचारी
कैसे सभा के बीच, आएगी नारी
बाजी चली है कपट भरी
आओ तो आओ ....

दुष्ट दुशासन वंश विनाशक
खीच रह्यो मेरो बदन को वासन
चीर हरण की मन मे धारी (ठनी)
आओ तो आओ ....
भीष्म पितामह, द्रोण गुरु देवा
बैठे विदुर जी धर्म के देवा
इनकी मति पर क्या धूल पड़ी
आओ तो आओ ....

हाथ पसारो आन उबारों
देर यही ह मेरी लाज बचालों
देवकी नन्दन बनी बिगड़ी
आओ तो आओ ....

गुलाब चंद
तकनीशियन (स्याही कारखाना)

कैलाश साहू
तकनीशयन
स्याहीकारखाना

बेटे भी घर छोड़ कर जाते हैं

घर को मिस करते है लेकिन कहते है
बिलकुल ठीक है ।
सौ – सौ ख्वाहिशे रखने वाले अब कहते है
कुछ नहीं चाहिए ।।
पैसे कमाने की जरूरत मे वो घर से
अजनबी बन जाते है ।
लड़के भी घर छोड़ जाते है ।।
बना बनाया खाने वाले अब वो
खाना खुद बनाते है ।
माँ, बहन, बीवी का बनाया अब वो कहा खा पाते है ?
कभी थके हारे भूखे भी सो जाते है
लड़के भी घर छोड के जाते है ।।
मोहल्ले की गलिया, जाने पहचाने रास्ते,
जहा दौड़ा करते ये अपनो के वास्ते ।
माँ – बाप, यार – दोस्त सब पीछे छूट जाते है,
तनहाई मे करके याद, लड़के भी आसू बहते है।
लड़के भी घर छोड़ के जाते हैं ।।
जो तकिये के बिना कही भी सोने कतराते थे ।
आकार कोई देखो तो वो कही भी अब सो जाते है ।
खाने मे सौ नखरे करने वाले, अब कुछ भी खा लेते है।
अपने रूम मे किसी को भी नहीं आने देने वाले
अब एक बिस्तर पर सबके साथ एडजस्ट हो जाते है
लड़के भी घर छोड़ के जाते है ।।
नई नवेली दुल्हन जान से
प्यारे भाई बहन छोटे छोटे बच्चे, चाचा चाची, दादा दादी ।
सब छुड़ा देती है साहब मे रोटी और कमाई
मत पूछो इनका दर्द वो कैसे चकाते है।
बेटियाँ ही नहीं साहब,
लड़के भी घर छोड़ के जाते है ।।
हर उस बेटे को समर्पित,
जो घर से दूर है ।।

समय

शुभम साहू
तक. (स्याही कारखाना)

समय का क्या है समय तो समय के साथ हरसमय बदलता रहता है किसी को समय पर समय न दे तो दिक्कत और समय दे दे तो दिक्कत, पर समय के साथ हर समय खुद को समय के लिए बदल लेना चाहिए। क्योकि समय बड़ा बलवान है । जो समय को समझता है वही एक समय मे अच्छा व्यक्ति बन सकता है और एक समय मे आप किसी के साथ बुरा कर रहे है तो वो समय भी बहुत नजदीक है जब आपका समय भी बुरा होगा ...इसलिए समय का महत्व समझे ताकि समय पर आपको भी कोई अपना समय न दे पाये ।

“
तेरी दुनिया मे ये मंजर क्यो है,
कही जख्म तो कहीं पीठ मे खंजर क्यो है
सुना है तू हर ज़र्रे मे रहता है
तो जमी पर कही मस्जिद तो कही मंदिर क्यो है
जब रहने वाले दुनिया के हर बंदे तेरे है
फिर कोई दोस्त तो कोई दुश्मन क्यो है
तू ही लिखता है हर किसी का मुकद्दर
फिर कोई बदनसीब और ....
कोई मुकद्दर का सिकंदर क्यो है ।
”

आहार और स्वास्थ्य

(संकलित)

पूरन चन्द्र
तक.(स्याही कारखाना)

प्रकृति ने हमे अनेक अनमोल उपहार आहार के रूप मे दिये है। यदि हम प्रकृति द्वारा प्रदत्त उपहारो अर्थात आहार का सही विधि से सेवन करते है तो हमारे शरीर के समस्त अंग स्वस्थ व निरोगी रहते है ।

1. आंवला – आंवला एक दिव्य आहार है। इसका सेवन शरीर को नियमित रूप से विटामिन सी' प्रदान करता है। इसके सेवन से हड्डिया मजबूत होती है व पाचन व्यवस्थित होता है।
2. गाजर – गाजर एक चमत्कारिक आहार है। इसका सेवन त्वचा को चमत्कारिक स्वस्थ्य प्रदान करता है,एवं आंतों की सफाई करते हुये शरीर को कब्ज व कैंसर से सुरक्षा प्रदान करता है।
3. मौसम्बी / संतरा / नींबू – मौसम्बी, संतरा, नींबू विटामिन सी' का भंडार है । इसमे पार्याप्त मात्रा मे रेशा भी होता है। इनको नियमित सेवन करने से पाचन मे सुधार व जीवनी शक्ति मे वृद्धि व त्वचा स्वस्थ्य होती है व सम्पूर्ण परिवार को वर्ष भर स्वस्थ व निरोगी रखता है ।
4. रागी – रागी एक श्रेष्ठ आहार है जो हड्डियों को शक्ति प्रदान करता है । इसका सेवन शरीर को शीतलता प्रदान करता है। शरीर का वजन कम करता है । भूख व मधुमेह को नियंत्रित करता है।
5. अलसी –अलसी में शरीर को जवान बनाए रखने वाला तत्व ओमेगा 3 होता है । इसमें अच्छी श्रेणी का कोलेस्ट्रॉल होता है। जिससे हृदय स्वस्थ रहता है। इसका सेवन शरीर के जोड़ो मे चिकनाई प्रदान करता है अपने आहार मे प्रतिदिन 20 से 40 ग्राम अलसी का सेवन करें ।
6. तुलसी – तुलसी एक श्रेष्ठ व स्वास्थ प्रदान करने वाली दिव्य औषधी है। इसका सेवन शरीर को अनेक प्रकार के रोगों के साथ साथ कैंसर व अन्य रोगों से सुरक्षा प्रदान करती है।
7. हल्दी – हल्दी एंटी सेप्टिक व एंटी बेकटेरियल है। हल्दी का नियमित प्रयोग शरीर को अनेक रोगो से सुरक्षा प्रदान करता है इसके नियमित सेवन से यकृत (लीवर) व फेफड़े स्वस्थ रहते हैं।

सफर की हद है यहाँ तक का कुछ निशान रहे

सफर की हद है यहाँ तक की कुछ निशान रहे
चले चलो की जहां तक थे आसमान रहे
ये क्या उठाए कदम और आ गई मंजिल
मजा तो तब है कि पैरों मे कुछ थकान रहे
वो शख्स मुझको कुछ जालसाज लगता है
तुम उसको दोस्त समझते हो फिर भी ध्यान रहे
मुझे जमीं की गहराइयों ने दबा लिया
मैं चाहता था मेरे सर पे आसमान रहे
अप अपने बीच मरासिम नहीं अदावत है
मगर ये बात हमारे ही दरमियान रहे
सितारों की फ़सलें उगा न सका कोई
मेरी ज़मीं पे कितने ही आसमां रहे
वो एक सवाल है फिर उसका सामना होगा
दुआ करो की सलामत मेरी जबान रहे ।
तू ज़िंदगी को जी,
उसे समझने की कोशिश न कर,
सुंदर सपनों के ताने बाने बुन,
उसमे उलझने की कोशिश न कर,
चलते वक्त के साथ तू भी चल,
उसमे सिमटने कोशिश न कर,
अपने हाथों को फैला, खुल कर सांस ले,
अंदर ही अंदर घुटने की कोशिश न कर,
मन मे चल रहे युद्ध को विराम दे,
खामख्वाह खुद से लड़ने की कोशिश न कर,
रास्ते की सुंदरता का लुत्फ उठा,
मंजिल पर जल्दी पहुँचने की कोशिश न कर

विजय गौर
तकनीशियन
(स्याही कारखाना)

उत्पादकता

धर्मेन्द्र कुमार यादव
तकनीशयन
(स्याही कारखाना)

हमारे द्वारा किए गए विभिन्न वस्तु एवं पदार्थ जब विभिन्न क्रियाओं से होकर प्रक्रिया का एक रूप तैयार करते हैं और अपनी मूल कीमत से अधिक कीमत अर्जित करते हैं, उसे हम उत्पाद कहते हैं।

वर्तमान में हम SPMCIL की विभिन्न इकाईयों के लिए स्याही का उत्पादन कर रहे हैं। हमारा उत्पाद खुले बाजार पर आधारित नहीं है, इसलिए हमें उत्पादकता की ओर अग्रसर होने की अधिक आवश्यकता होती है। हमारे द्वारा किये जाने वाली प्रतिभूति स्याही का उत्पादन हम BNP (Dewas), CNP (Nashik), ISP (Nashik), SPP (Hyderabad) एवं आरबीआई की इकाई Salboni एवं Mysuru के लिए करते हैं, जो कि हमारे उपभोक्ता हैं।

प्रतिभूति स्याही के निर्माण हेतु हम भारत सरकार द्वारा प्रमाणित दिशा-निर्देशों एवं मापदंडों के आधार पर कम मूल्य पर सम्बन्धित पक्षकारों से उच्चतम गुणवत्ता की सामग्री क्रय करते हैं और उसके बाद मानव श्रम और मशीनों के तालमेल से गुणवत्तापूर्ण स्याही का उत्पादन करते हैं।

सामग्री श्रम और मशीनों से हम उत्पादन तो कर सकते हैं, परन्तु लाने हेतु हमें कुछ विशेष प्रकार की सावधानियाँ बरतनी पड़ती हैं।

* सामग्री :- उच्चतम गुणवत्ता की सामग्री को हम वाजिब दरों पर क्रय करते हुए उसका 99 फीसदी उपयोग करके अपने उत्पाद को तैयार करते हैं।

स्याही कारखाना में बनने वाली प्रतिभूति स्याही का उत्पादन उचित गुणवत्ता वाली सामग्री व कच्चे माल का उपयोग करके किया जाता है, जिससे कि स्याही की गुणवत्ता बनी रहती है।

मशीनों का रखरखाव :- एक अच्छे उत्पाद के लिए जरूरी है कि मशीनों का नियमित रखरखाव हो, मशीनों की नियमित सफाई व रखरखाव से ही उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद को तैयार किया जा सकता है।

वर्तमान में स्याही कारखाना में SDV-1300, SDV-900, SDW-800, SDW-600 पिसाई मशीनें हैं, जिनके रखरखाव व सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाता है, जिससे कि स्याही की गुणवत्ता एवं उत्पादन में किसी भी प्रकार की कोई कमी नहीं आती है।

* मांग एवं पूर्ति :- यह उत्पादकता बरकरार रखने का सबसे आवश्यक बिन्दु है। पिछले वित्तीय वर्ष में हमारे उत्पादन की मांग के आंकड़े कितने थे और हमने कितने कार्य दिवस में उक्त मांग की पूर्ति की थी तथा यह भी आवश्यक है कि वर्तमान में हमारे उत्पाद की मांग कितनी है, अगर यह मांग अधिक है तो भी हम वर्तमान में ही उपलब्ध संसाधनों से बढ़ी हुई मांग की पूर्ति कैसे करते हैं।

* गुणवत्ता जांच :- जैसा कि हम पूर्व में यह कह चुके हैं कि हमारे उत्पाद के उपभोक्ता हमारी समकक्ष इकाईयाँ ही हैं, इसका मतलब यह नहीं कि कि हमारे द्वारा गुणवत्ता मानकों की अनदेखी की जाए। हमें प्रतिदिन समय-समय पर स्याही की गुणवत्ता की जांच प्रयोगशाला में करना होगा। वहीं हमारी उपयोगकर्ता इकाईयों से उत्पाद की गुणवत्ता संतुष्टि का ब्यौरा समय-समय पर मांगना होगा। अगर हमारे उत्पाद में किसी प्रकार की त्रुटि पाई जाती है, उसे तत्काल प्रयोगशाला में उचित दिशा-निर्देशों से मिलान कर दूर करना होगा। जिससे कि स्याही कारखाना में तैयार प्रतिभूति स्याही की गुणवत्ता सदैव बनी रहे।

* दक्ष बल संख्या :- किसी भी कारखाने को संचालित करने के लिए पर्याप्त मात्रा में दक्ष बल संख्या का होना अत्यंत आवश्यक है। बिना इनके किसी भी तरह के संचालन की कल्पना करना व्यर्थ ही है। हमारी प्रबंधकीय बनावट और श्रमिक संरचना पिरामिड के आकार की होनी चाहिए, जिससे कि उत्पादन में निरंतर बढ़ोतरी हो एवं श्रमिक समस्याओं का त्वरित समाधान होता रहे।

नवनिर्मित स्याही कारखाना
अपार संभावनाओं का द्वार

पुष्पेन्द्र पाल सिंह
वरिष्ठ पर्यवेक्षक (स्याही कारखाना)

इंसान का स्याहियों से या रंगों से सदियों पुराना नाता है या यूँ कहें, जबसे मानव सभ्यता का धरती पर प्रादुर्भाव हुआ, तभी से वह इन रंगों से वाकिफ हैं। ये सम्पूर्ण ईश्वरीय प्रकृति ही बहुरंगों से सराबोर है और मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक कुदरत के इन बहुआयामी रंगों में अपनी आत्मिक एवं पारलौकिक शांति का असीम सौपान करता रहा है। जरा एक पल को सोचे, यह संसार, प्राकृतिक सुरम्य वातावरण, भौतिक पदार्थ, आकाशीय पिण्ड जैसे चाँद, सूरज, तारे यदि रंगहीन होते तो क्या होता ? यह ख्याल मात्र ही हमारे लिये बेहद डरावना है एवं ऐसा जीवन अकल्पनीय है।

और यहीं से प्रेरित होकर शायद स्याहियों के निर्माण की आवश्यकता हुई होगी। शायद विविधता लिए ये रंग और कई महत्वपूर्ण कार्यों में उपयोग आने वाली स्याहियों द्वारा मनुष्य अपवने को उस परम सत्ता के करीब लाने का पयास करता है। वैसे भी कहते हैं ''आवश्यकता आविष्कार की जननी है'' "Necessity is the mother of invention."

स्याही की परिभाषा :– स्याही या रोशनाई एक द्रव या पेस्ट है, जिसमें बहुत से रंजक (Pigments) हुए हैं और जिसका उपयोग लिखने, चित्र बनाने आदि के लिये होता है।

Inks :- A coloured fluid or paste used for writing, drawing, printing or duplicating.

स्याही के पर्यायवाची शब्द और अन्य भाषाई शब्दार्थ :– स्याही को रोशनाई, मसि, जर्मन में Tinte, फ्रेंच में encre एवं स्वीडिश में black इत्यादि नामों से भी जानते हैं। स्याहियों के द्वारा मनुष्य अपने आत्मीय, भावनात्मक, कलात्मक चित्रात्मक, सुरक्षात्मक, प्रतीकात्मक, अन्वेषणक, औद्योगिक समस्त प्रकार की अभिव्यक्तियों को अत्यंत प्रभावी रूप से संप्रेषित कर पाया है।

चित्रों से याद है ना विश्व प्रसिद्ध पेंटिंग्स जैसे – मोनालिसा, द लास्ट सपर की। क्या यह बिना स्याहियों के संभव था। जवाब होगा नहीं।

स्याही के उपरोक्त वर्णित महत्व को देखते हुए वर्तमान में देवास स्थित बैंक नोट मुद्रणालय परिसर में अवस्थित स्याही कारखाना देवास में प्रतिभूति स्याहियों (Security Inks) के निर्माण में सक्रिय एक महत्वपूर्ण संस्थान है, जो अपनी सतत् अनुसंधान एवं विकास के द्वारा विशेष प्रतिभूति गुणों युक्त स्याहियों बनाने में इसे महारत हासिल है। यहाँ उच्च दक्ष रसायनज्ञ एवं स्याही विशेषज्ञों द्वारा पूर्णतः स्वदेशी कच्ची सामग्री एवं स्वविकसित फॉर्मूला द्वारा स्याही का निर्माण किया गया है, जो कि भौतिक एवं कई प्रकार के रसायन प्रतिरोधी गुणों से युक्त है। स्याही कारखाना में विविध प्रकार के प्रतिभूति एवं अप्रतिभूति प्रशासकीय दस्तावेजों जैसे – बैंक नोटों, करेंसी नोटों, पासपोर्ट, वीजा, ज्यूडिशियल और नॉन–ज्यूडिशियल स्टाम्प, बैंक चेकों, रेवेन्यू टिकटों, स्मारक टिकटों, पेपर आदि में उपयोग में आने वाली स्याहियों का उत्पादन यहाँ कार्यरत स्याही वैज्ञानिकों एवं रसायनज्ञों द्वारा स्वनिर्मित स्याहियों के फॉर्मूला से किया जा रहा है, जो कि प्रतिभूति एवं भारतीय अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण के लिहाज से बेहद आवश्यक था। स्याही कारखाना उद्योग के कारण हमारे SPMCIL को बहुत ही आर्थिक लाभ हुआ है एवं निगम की मिनिरत्न श्रेणी में उत्कृष्ट रेटिंग में भी स्याही कारखाना की महती भूमिका रही है।

नवीन स्याही कारखाना का निर्माण :– तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था में बैंक नोटों की अधिक मांग एवं विमुद्रीकरण के कारण स्याहियों की खपत में अभूतपूर्व वृद्धि होने से एवं स्याही उद्योग के वैश्विक महत्व को देखते हुए स्याही कारखाना का विस्तार करना नितांत आवश्यक था। इस उज्ज्वल अवसर को निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय एवं निदेशक मण्डल ने अपनी दूरदृष्टि एवं प्रखर बौद्धिक क्षमताओं के कारण पहचान कर स्याही निर्माण क्षमता में वृद्धि एवं विस्तार के उद्देश्य से एक नवीन विश्वस्तरीय स्याही कारखाना का निर्माण किया गया है, जिसके कारण स्याही निर्माण

की वार्षिक क्षमता लगभग 1500 मेट्रिक टन हो जावेगी। इस नवीन स्याही कारखाना में स्याही निर्माण हेतु विश्वस्तरीय गुणवत्ता से उच्च दक्ष मशीनों को स्थापित किया गया है, जिसमें उत्पादन कार्य भी प्रारम्भ हो गया है। प्रतिभूति स्याहियों को अत्यंत सुरक्षित मानते हुए यहाँ उच्च स्तरीय गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला एवं स्याहियों में नए प्रयोग एवं अनुसंधान के लिए अनुसंधान प्रयोगशाला, जो कि सभी विश्वस्तर के उपकरणों से सुसज्जित है, का भी निर्माण किया गया है। वर्तमान में स्याही कारखाना में समस्त प्रतिभूति कार्यों (Security related documents) में प्रयोग की जाने वाली स्याहियों का निर्माण हो रहा है, जिनमें प्रमुखता से क्विक सेट इंटाग्लिओ, ड्राय ऑफसेट, फ्लोरोसेंट नंबरिंग, अनविजिबल एवं बाय फ्लोरोसेंट स्याहियाँ हैं। इन समस्त प्रकार की स्याहियों का निर्माण यहाँ कार्यरत वैज्ञानिकों, स्याही विशेषज्ञों एवं उच्च प्रशिक्षित प्रयोगशाला रसायनज्ञों एवं दक्ष उत्पादन कर्मचारियों द्वारा स्वयं किया गया है, जो भारत शासन की ''मेक इन इंडिया'' मुहिम पर भी पुरजोर समर्थन करता है। देश की अर्थव्यवस्था को बचाने के लिजाज से एवं असामाजिक तत्वों से एवं पड़ोसी दुश्मन देशों से नकली नोट एवं जाली शासकीय दस्तावेजों के प्रचलन को रोकने एवं पहचानने में स्वनिर्मित प्रतिभूति स्याहियों का योगदान अतुलनीय है। यह स्याही कारखाना के लिए आरंभ से ही गौरवशाली रहा है कि इसे प्रारंभ से मुख्य महाप्रबंधक महोदय के मार्गदर्शन, श्रेष्ठ प्रबन्धकों, वैज्ञानिकों, रसायनज्ञों एवं स्याही विशेषज्ञों का सानिध्य प्राप्त हुआ, जिनकी तीक्ष्ण बौद्धिक क्षमताओं एवं नित नए अनुसंधान का ही परिणाम है कि उच्च विश्वस्तरीय गुणवत्ता की स्वनिर्मित प्रतिभूति स्याहियों का स्वदेश में निर्माण संभव हुआ एवं नोटबंदी के दौरान भी समस्त प्रचलित मुद्राएँ बंद हो गई व नवीन मुद्राओं का चलन हुआ, उनके अनुसार गुणवत्ता व विभिन्न शेड की मुद्राओं के अनुसार बहुत ही कम समय में उच्च गुणवत्ता से तैयार कर व स्याहियों का अत्यधिक मात्रा में उत्पादन कर निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करना एक महान किन्तु अकल्पनीय चैलेन्ज था, जिसे हमने अपने ''राष्ट्रहित सर्वोपरि'' की भावना से संभव कर दिखाया और यही कारण है कि वर्ष 2016-17 में विभिन्न स्याहियों का 825 मेट्रिक टन का रिकार्ड उत्पादन किया जा सका। वर्तमान में यह स्याही कारखाना विदेशों में भी स्याहियों को निर्यात करने का अवसर पाने के लिए प्रयासरत है।

अतः माँ चामुण्डा की नगरी देवास में स्थित नवीन स्याही कारखाना हमारे निगम के लिए अपार संभावनाओं एवं वैश्विक बाजार में हमारी उपस्थिति का प्रमुख द्वार साबित होने के लिए तत्पर रहेगा, ऐसी सभी की शुभकामनाएँ हैं।

डॉक्टर

इस धरती पर ईश्वर का दूसरा स्वरूप

पुष्पेन्द्र कुमार पटेल
वरि. पर्यवेक्षक
(स्याही कारखाना)

चिकित्सा वास्तव में एक उत्तम कार्य है।

* कष्ट एवं बीमारियों से ईश्वर के अतिरिक्त यदि आपको कोई बचा सकता है तो वह डॉक्टर है।
* आपके उपचार हेतु अपनी इच्छाओं एवं परिवार को नज़रअंदाज करके लंबे समय तक कार्य करना डॉक्टर की जीवनशैली बन जाती है।
* आपके हृदय की समस्या को जानने के लिए डॉक्टर को खतरनाक विकिरणों के संपर्क में आना पड़ता है।
* कई बार अपने बच्चों को बुखार एवं दर्द में छोड़कर भी डॉक्टर को आपके उपचार हेतु आना पड़ता है।
* ऑपरेशन के दौरान डॉक्टर को रोगी की बीमारियों से संक्रमण का खतरा रहता है।
* वायरल बुखार के उपचार के दौरान डॉक्टर को हर प्रकार के संक्रमणों का खतरा रहता है।

एक डॉक्टर आपको स्वस्थ रखने हेतु अपना पूरा जीवन समर्पित कर देता है।

स्याही कारखाना

मेक इन इंडिया की ओर बढ़ते कदम

एम.एम. लोदी
वरिष्ठ पर्यवेक्षक
(स्याही कारखाना)

प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड की इकाई बैंक नोट प्रेस की स्थापना के साथ ही इस परिसर में स्याही कारखाना की एक इकाई भी स्थापित की गयी थी। सिकपा स्विट्जरलैण्ड के तकनीकी सहयोग से स्थापित सेक्युटी प्रिंटिंग इंक के मामले में यह देश का एकमात्र संस्थान था। प्रारम्भ में कुछ आयातीत कच्चे माल से स्याही का उत्पादन किया जाता रहा है, धीरे-धीरे विभिन्न आवश्यक रॉ-मटेरियल्स का स्वदेशीकरण किया गया। कुछ गिने-चुने रॉ-मटेरियल को छोड़कर, जिनका कि उत्पादन भारत में नहीं होता, बाकि सभी स्वदेशी रॉ-मटेरियल से ही स्याही का निर्माण किया जा रहा है। स्याहियों की मांग को देखते हुए उत्पादन बढ़ाने के लिए एक नए स्याही कारखाने का निर्माण किया गया है, जिसमें कि माह फरवरी 2019 से नियमित रूप से स्याही का निर्माण प्रारम्भ हो जाएगा।

स्याही कारखाने में ड्राय ऑफसेट, क्विक सेट इंटग्लिओ एवं फ्लोरोसेंट नम्बरिंग इंक्स का निर्माण किया जा रहा है एवं इन स्याहियों के लिए लगने वाले वॉर्निश का निर्माण भी स्वदेशी रॉ-मटेरियल से किया जा रहा है। स्याही कारखाना द्वारा निम्नलिखित संस्थानों के लिए सेक्युटी इंक का निर्माण किया जा रहा है।

1. प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड की इकाई बैंक नोट प्रेस देवास एवं करंसी नोट प्रेस, नासिक रोड़ भारतीय रिजर्व बैंक नोट मुद्रण (प्रा.) लिमिटेड की प्रेस मेसुरू प्रेस एवं सल्बोनी प्रेस में नोटों की प्रिंटिंग के लिए ड्राय ऑफसेट, क्विक सेट इंटग्लिओ एवं फ्लोरोसेंट नम्बरिंग इंक्स का निर्माण किया जा रहा है।
2. इंडियन सेक्युटी प्रेस नासिक रोड़ में आने वाली स्याहियाँ जिसके द्वारा कई दस्तावेज छापते हैं, जैसे - भारतीय डाक तार विभाग के लिए पोस्टर ऑर्डर, डाक टिकट, रेवेन्यू टिकट इत्यादि। पासपोर्ट में लगने वाली सभी inks के साथ Bi-fluorescent का निर्माण किया जा रहा है।
3. प्रतिभूति मुद्रणालय हैदराबाद के लिये ISRA INK, जो कि पहले विदेश से मंगवाई जाती थी, उसका विकास भी यहीं कर, स्वदेशी रॉ-मटेरियल से स्याही कारखाना में ही निर्माण किया जा रहा है।

स्याही का निर्माण विभिन्न अवस्थाओं में किया जाता है। सर्वप्रथम भारण विभाग में तौलकर, मिश्रण विभाग में मिश्रित किया जाता है। तत्पश्चात् ग्राईंडिंग ट्रिपल रोल मिल पर ग्राईंड किया जाता है। इस हेतु स्याही कारखाना में 10 बड़ी ग्राईंडिंग ट्रिपल रोल मिल के साथ-साथ कुछ छोटी ग्राईंडिंग ट्रिपल रोल मिल भी है, इन मशीनों पर ड्राय ऑफसेट, क्विक सेट इंटग्लिओ एवं फ्लोरोसेंट नम्बरिंग इंक्स का निर्माण किया जाता है। इंक्स की क्वालिटी की टेस्टिंग कन्ट्रोल लेब में की जाती है, जहाँ पर आवश्यकता होने पर इंक्स की गुणवत्ता परीक्षण पश्चात् अंतिम रूप में इंक्स की डिब्बाबंदी की जाती है। स्याही कारखाना में बनी हुई सेक्युटी इंक्स केवल सेक्युटी प्रिंटिंग (प्रतिभूति मुद्रण) के लिए ही उपयोग में लाई जाती है, इसलिए इसमें कुछ विशेष गुणधर्मों का होना आवश्यक है। इस टेस्टिंग हेतु कन्ट्रोल लेब में विभिन्न प्रकार के आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित है, जिसमें एक Computerized Light & Weather Fastness Xeno Test है, जिसमें कि इंक्स से प्रिंटेड पेपर पर सूर्य का प्रकाश तथा मौसम का क्या प्रभाव पड़ता है, इसका परीक्षण किया जाता है। इसी तरह Tack Ed§ Viscosity देखी जाती है, ताकि प्रिंटिंग मशीन पर बिना किसी अवरोध के चलती रहे। UV-Cabinet में Dry Offset Fluorescent, Bi-Fluorescent एवं Numbering inks का fluorescent देखा जाता है। स्याही कारखाना में बगैर किसी विदेशी तकनीक के सहयोग से निम्न विकास एवं अनुसंधान कार्य किए गए हैं :-

1. QS Intaglio Ink का विकास स्वदेशी रॉ-मटेरियल से कर एवं निर्माण पश्चात् इनका Trial विभिन्न प्रेसों में किया गया, जिसमें उत्साहजनक परिणाम प्राप्त हुए। वर्तमान में बैंक नोट प्रेस सहित करंसी नोट प्रेस नासिक, BRBNMPL मैसूर एवं

BRBNMPL सालबोनी में इन इंक्स का supply किया जा रहा है।

2. नई डिजाइन के सभी नोटों के लिये लगने वाली ड्राय ऑफसेट एवं फ्लोरोसेंट इंक्स को मेच-मेचिंग कर विकास कर बैंक नोट प्रेस सहित करंसी नोट प्रेस नासिक, BRBNMPL मैसूर एवं BRBNMPL सालबोनी में इन इंक्स का supply किया जा रहा है।

3. पूर्व में Fluorescent Numbering Red Ink का विकास भी यहीं किया गया था तथा वर्तमान में Fluorescent Numbering Black Ink का निर्माण भी स्वदेशी रॉ-मटेरियल से किया गया।

विकास एवं अनुसंधान के साथ-साथ यहाँ पर विशेषज्ञों द्वारा जाली नोटों का परीक्षण भी किया जाता है, इस कार्य हेतु एक अलग से फोर्ज्ड नोट डिटेक्शन सेल यहाँ पर स्थापित है, जिसमें विशेषज्ञों द्वारा किए गए परीक्षण प्रतिवेदन एवं उनके साक्ष्य के आधार पर जाली नोट सम्बन्धित अपराध की गंभीरता के आधार पर अपराधियों का दण्ड निर्धारित किया जाता है। हाल ही में वर्तमान मुख्य महाप्रबंधक श्री राजेश बंसल द्वारा नयी गुणवत्ता एवं पर्यावरण नीति जारी की गई, जिसके अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण ISO 9001-2015 & ISO 14001-2015 के अनुसार कार्य किया जा रहा है। इसी के अनुसार स्याही कारखाना का स्टाफ भी अपना सतत् योगदान दे रहा है। भविष्य में विदेशों के लिए विभिन्न प्रकार की स्याही का निर्माण कर एक्सपोर्ट करने के लिए महाप्रबंधक महोदय प्रयत्नशील हैं।

दोहे

क्रोध दिखाता वह सदा, जो होता कमजोर।
सीटीं दे झींगुर सदा, हाथी करे न शोर ।।

बुद्ध हँसे थे देखकर, हथियारो की होड ।
इक सुरंग अंधी यहा, अन्धो की है दौड़ ।।

नहीं चाहिए बम हमे, हँसकर बोले बुद्ध।
जीत सको तो जीत लो, अन्तर्मन का युद्ध।।

किसी बड़े से मिले तो, दूरी का हो ध्यान।
जलनिधि से मिलकर नदी, खो देती पहचान।।

सपना साहू
तक. (स्याही कारखाना)

लगती है निज प्रंशंसा, किसे बुरी अब यार ।
खुश होता है शेर जब, स्तुति करे सियार।।

दिवस दशहरे से मने, दिवाली हर रात।
सच्चों को सेहरा बंधे, बदकारों को मात।।

वाहन चुनने मे हुई, लक्ष्मी जी से चूक ।
इसीलिए वे बना रही, हम तुम सबको उलूक।।

रावण मरता राम से, मूसा से फिरआन।
सब कर्मोका फैसला, किसका तारक कौन।।

खुद मशाल न थाम सको, तो हो लो उसके साथ।
अँधियारे मे रोशनी, की जो करता हो बात।।

नया घर

इस नव वर्ष पर, एक नया घर बनाया है
उम्मीदों का फिर से, एक कदम उठाया है।
नई चुनौती, नया समूह, नया लक्ष्य , फिर से आया है
बनेंगे उत्पादन कीर्तिमान, आसमान चुने का फिर से, मन बनाया है
नई रवानी, नया जोश, नया जज्बा, फिर से आया है
समझ लेना ए दोस्तो, इस उम्र मे फिर से यौवन आया है ।
भरोसा है मुझे अपने कर्मोपर
दुनिया पर छा जाने का फिर से, पागलपन आया है।
विदेशो मे भेजेंगे स्याहियां, स्याहियों को फिर सजाया है,
उम्मीदों का फिर एक पौधा लगाया है,
उम्मीदों का फिर एक दिया जलाया है।
संभल जाना, पतलून संभालना दुशमनों ,
बड़े अरसे बाद, आज फिर से बचपना आया है ।
भूल कर गुस्ताखिया नादानों की,
दुशमनों को आज, फिर से गले लगाया है ।
नया समा, नया आशियाँ, एक नया ख्वाब, सजाया है ,
उम्मीदों का तारा फिर से नज़र आया है ।
खुदा तू देना फिर साथ मेरा,
तेरे दर पे, फिर से शीश झुकाया है।
इस नव वर्ष पर, एक नया घर बनाया है,
उम्मीदों का फिर से, एक कदम उठाया है।

विनय जैन
फोरमेन(स्या.कार.)

क्या आप जानते है ?

- स्वप्नों के अध्यन को औनीरोलोजी कहते है।
- मनुष्य के फेफड़े का आंतरिक क्षेत्रफल 93 वर्ग मीटर होता है, जो शरीर के बाहय क्षेत्रफल का 40 गुना होगा है ।
- हडडिया कांक्रीट जैसे मजबूत और ग्रेनाइट जैसे कठोर होती है।
- 15 अगस्त, 1969 को भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन की स्थापना हुई ।
- दिलवाड़ा का जैन मंदिर माउंट आबू मे विमल शाह द्वारा 1031 ई मे बन वाया गया था ।
- केन्द्रीय औधोगिक सुरक्षा बल की स्थापना 1969 ई मे हुई जिसका मुख्यलय नई दिल्ली मे है।
- प्रसिद्ध पुस्तक पंचतंत्र के लेखक विष्णु शर्मा है।
- यूनानी विद्वान ईरैटोस्थनिज को भूगोल का पिता कहा जाता है।
- सबसे चमकीला एवं गर्म ग्रह शुक्र है।
- माउंट एवरेस्ट को पहले चोटी 15 कहा जाता था।
- उत्तर भारत के मैदानी भागो मे शीत ऋतु मे वर्षा पश्चिम विक्षोम या जेट स्ट्रीम के कारण होती है।
- गैलियम धातु कमरे के ताप पर द्रव अवस्था मे पाया जाता है ।
- सिल्वर नाइट्रेट का प्रयोग निशान लगाने वाली स्याही बनाने मे किया जाता है , मतदान के समय मतदाताओ की अंगुलियो पर इसी का निशान लगाया जाता है।
- भारत को तलवार के बल पर विजित किया गया है, और तलवार के बल पर ही इसकी रक्षा की जाएगी यह कथन लार्ड एलिगन द्वितीय का है ।
- तख्ते ताउट (मयूर सिंहासन) का निर्माण शाहजहाँ द्वारा करवाया गया था ।

कोशिश कर

मुकेश मिश्रा
तक. (स्याही कारखाना)

कोशिश कर, हल निकलेगा ।
आज नहीं तो, कल निकलेगा ।।
अर्जुन के तीर सा सध,
मरुस्थल से भी जल निकलेगा ।।
मेहनत कर, पौधों को पानी दे ,
बंजर जमीन से भी फल निकलेगा ।
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे,
फौलाद का भी बल निकलेगा।
जिंदा रख दिल मे उम्मीदों को,
गरल के समुंदर से भी गंगाजल निकलेगा ।
कोशिशे जारी रख कुछ कर गुजरने की,
जो है आज थमा थमा सा, चल निकलेगा।।
जिसका मन मीठे झरने सा
निर्मल बहता पानी हो
जो साये मे धूप दिखा दे
इतना तो जो ज्ञानी हो
जिसके जीवन रूपी घर के
खुले सभी दरवाजे हों
जिसके फक्कडपन के आगे
बौने राजे महाराजे हों
जो कांटो पे चल कर
हरपल मुसकाना सिखला दे
जो विष अपने हिस्से मे रख
अमृत घर घर मे पहुचा दे
जिसके कदमों के रज कण से
मुक्ति का हर दर खुल जाये
भगवन ऐसे गुरुवार का
इसी जनम दर्शन हो जाये।

मेडिकल एमेरजेंसी की स्थिति मे क्या करे ?

(संकलित)

सुश्री दीपाली उपाध्याय
क.का. सहायक

1. दिल का दौरा

- फ़र्स्ट एड टिप्स : व्यक्ति को उस स्थिति मे बिठाये या लिटाये, जिसमे वह आराम महसूस करे ।
- बेस्ट पोजिसन यह है की उसे जमीन पर दीवार से सटाकर बैठाये, घुटनो को थोड़ा-सा मोड़े, सिर और गर्दन को दीवार के सहारे सपोर्ट देकर बिठाये ।
- ध्यान रहे, व्यक्ति अपनी कानशियसनेस (चेतना) न छोड़े, इसलिए उसे हवादार जगह पर लिटाये या बिठाये।
- उसकी धड़कन, नब्ज, ब्लड प्रैशर और कानशियसनेस के स्टार को बीच - बीच मे चेक करते है ।
- उसे तब तक चलने न दे, जब तक बहुत जरूरी न हो।
- यदि व्यक्ति को सांस लेने मे कठिनाई हो रही हो, तो उसकी पीठ के पीछे तकिया रखकर ऊंचा करे।
- तुरंत डॉक्टर से फोन पर बात करे, उनके द्वारा बताई गई मेडिसिन दे।
- एमेरजेंसी होने पर तुरंत एंबुलेंस के लिए काल करे ।
- अटैक आने के यदि तीन घंटे के अंदर सही उपचार किया जाये, तो खतरे को टाला जा सकता है।

2. पैनिक अटैक

- इस स्थिति मे पीड़ित को हवादार जगह पर लिटाये और लंबी लंबी सांस लेने को कहें ।
- अटैक के कारण यदि हाथ-पैर काँप रहे हो, गला सूख रहा हो या दिल की धड़कने तेज हो रही हो, तो पीड़ित को लंबी लंबी साँसे लेने के लिए कहे।
- अगर वह कोई बात बनाना चाहता/चाहती है, तो उससे बहस करने की बजाय उसकी बात ध्यान से सुने।
- उसकी मनोस्थिति को समझने की कोशिश करे, न की उसे समझने की।

3. एसिडिटी

- फ़र्स्ट एड टिप्स : पीड़ित को बेड पर लिटाये और बेड को सिर की तरफ से छह से आठ इंच ऊपर उठाकर रखे ।
- ध्यान रहे, व्यक्ति के सिर के नीचे 2-3 तकिये लगाकर नहीं रखे।
- तला व मसालेदार भोजन, कैफीन, अल्कोहल और पाचन मंत्र को प्रभावित करने वाले भोजन न दे।
- खाना अच्छी तरह से पच जाये, इसलिए सोने से दो- ढाई घंटे पहले खाना खाये।
- तनाव रहित रहने का प्रयास करे, तनाव कम होने पर सारा बाडी सिस्टम सुचारु रूप से काम करेगा।

4. अस्थमा अटैक

- फ़र्स्ट एड टिप्स : व्यक्ति को आरामदायक स्थिति मे कुर्सी पर बिठाये।
- पीड़ित को अकेला न छोड़े, और न ही उसके आसपास भीड़ इकट्ठा होने दे।
- अस्थमा से पीड़ित लोग हमेशा अपने साथ इन्हेलर और रिलीवर पफ या इन्हेलर दे।
- अगर रिलीवर पफ या इन्हेलर से उसकी हालत मे कोई सुधार न हो, तो तुरंत डाक्टर के पास ले जाये।

5. बेहोशी की हालत मे

- फ़र्स्ट एड टिप्स : पीड़ित को हवादार जगह पर लिटाकर पैरों के नीचे 2-3 तकिये रखकर ऊंचा करे।
- ठोड़ी को ऊपर की तरफ ऊंचा करे।
- यदि हाथ पैर ठंडे हो रहे हो, तो गरम करने के लिए मसाज करे।
- लिक्विड फूड जैसे पानी, छाछ या नीबू पानी पीने के लिए न दे।

6. मोच या हड्डी टूटने पर

- फ़र्स्ट एड टिप्स : चोट लगी हुई जगह को बिना किसी सपोर्ट के हिलाये डुलाये नहीं, न ही वह पर किसी तरह का दबाव डाले।
- अगर हिलाना ही पड़े, तो चोट वाली जगह और नीचे कार्डबोर्ड का टुकड़ा या अखबार / मैगजीन को फ़ोल्ड करके रखे। फिर सावधानीपूर्वक कपड़े से बांध दे।
- सूजन और दर्द को कम करने के लिए चोट वाली जगह पर बर्फ लगाए यानि थोड़ी देर तक बर्फ रगड़े।
- ध्यान रखे, डायरक्ट बर्फ रगड़ने की बजाय उसे रुमाल या प्लास्टिक बैग मे रखकर लगाए।
- किसी आइनमेंट या तैल की मालिश न करे।
- सिर, गर्दन और पीठ पर चोट लगने पर ज्यादा हिले डुले नहीं।
- मोच या चोटवाली जगह पर सूजन और दर्द बढ़ने पर तुरंत आर्थोपेदिक डाक्टर को दिखाये।

7. जलने की स्थिति मे

- फ़र्स्ट एड टिप्स : कपड़ो मे आग लगने पर इधर-उधर भागने की बजाय तुरंत जमीन पर रोल करें।
- जले हुये व्यक्ति पर पानी डालने की बजाय उसे कंबल मे लपेटकर आग बुझाने का प्रयास करे।
- पीड़ित को सुरक्षित स्थान पर ले जाकर तुरंत कपड़े बदले, इससे शरीर को कम हानि होगी।
- जली हुई जगह को पानी के नल के नीचे 10-15 मिनट तक रखे।
- वहाँ पर बर्फ लगाने की गलती न करे, न ही बर्फ वाला ठंडा पानी डाले।
- दर्द और सूजन से राहत पाने के लिए वहां पर ऐलोवेरा बेस्ड लोशन लगाए।

8. एसिड से जलने पर

- फ़र्स्ट एड टिप्स : एसिड से जली हुई त्वचा पर तब तक साफ व ठंडा पानी डाले, जब तक की जलन कम न हो
- एसिड लगे कपड़ों, ज्वेलरी और जूते को निकाल दे।
- आंखो मे यदि कांटैक्ट लेंस लगाया हुआ है, तो तुरंत निकाल दें, ठंडे पानी से आंखो को कम से कम 15-20 मिनट तक धोये, तुरंत डाक्टर को दिखाये।
- जली हुई त्वचा पर कोई क्रीम या आइनमेंट न लगाए, केवल डाक्टर द्वारा बताई गई क्रीम ही अप्लाइ करे।
- पीड़ित को सांस लेने मे परेशानी हो रही हो, तो तुरंत खुली हवा मे ले जाये।
- यदि स्थिति गंभीर हो, तो तुरंत डाक्टर के पास ले जाये या पीड़ित के लिए आक्सीजन का इंतजाम करे।
- बेहोश व्यक्ति को जबर्दस्ती पानी पिलाने की कोशिश न करे बल्कि जल्दी से जल्दी डाक्टर के पास ले जाये।

9. सड़क दुर्घटना

- फ़र्स्ट एड टिप्स : खून का बहाव रोकने के लिए उस जगह को ज़ोर से दबाकर रखे या फिर साफ कपड़े से बांधकर रखे, जब तक खून वहना बंद न हो जाये।
- दुर्घटना ग्रस्त व्यक्ति की साँसे और नब्ज चेक करते रहे, तुरंत डाक्टर के पास ले जाये।
- सड़क दुर्घटना के दौरान सिर या रीढ की हड्डी मे चोट लगने पर पीड़ित को ज्यादा हिलाये नहीं, बल्कि लिटा दे।
- यदि, डाक्टर के पास ले जाने मे देर हो रही हो, तो पैरों को ऊपर ऊंचाई पर करके लिटाये।
- घबराहट के कारण दुर्घटना ग्रस्त व्यक्ति के हाथ पैर ठंडे हो जाते है इस स्थिति मे उसकी हथेली और पैरो के तलुओं की मालिश करे, ताकि गर्माहट बनी रहे।

सुश्री शगुन माली
सुपुत्री श्री मनीष माली
(तक. विद्युत अनुभाग)
को कराटे स्पर्धा में
प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करने पर
हार्दिक शुभकामनाएँ!

मास्टर अभिषेक रैनीवाल
सुपुत्र श्री धर्मेन्द्र रैनीवाल
(सीसी टीवी अनुभाग)
हायर सेकेण्ड्री परीक्षा 2019 में
प्रथम आने और चार विषयों में
विशेष योग्यता प्राप्त करने पर
हार्दिक शुभकामनाएँ!

मछलीघर

(प्रविष्टि क्र. 6 पर आधारित रचना)

लालचंद्र गुप्ता
(सहायक– क्रय)

वो रविवार का दिन था, मैं सुबह लगभग 6 बजे ही उठ गया । मुझे कमरे में अजीब सी घबराहट जैसी महसूस हो रही थी । इसलिए मैंने सोचा की क्यूँ ना बाहर घूम आऊ। बाहर लोगों की चहल–पहल नहीं थी, लेकिन पेड़ पौधों को देखा तो ओस में घुलकर बहुत ही खूबसूरत लगे । वहीं चिड़ियों की चहचाहट कानों में पड़ी तो मन मुग्ध हो गया ।

काफी वक्त हो गया तो घर वापस आया । याद आया की मेरे एक मित्र ने मुझे आज खाने पर बुलाया था तो वहाँ जाने की तैयारी में लग गया । पास की ही कॉलोनी में घर था तो पैदल ही चला गया । वहाँ पहुँचा तो मित्र और उनकी पत्नी ने मेरा आदर सत्कार के साथ स्वागत किया । चूंकि खाना बनने में थोड़ा समय था, तो मित्र ने अपना घर दिखाना शुरु किया । घर काफी अच्छा बनाया था, फिर मेरी नज़र उस मछलीघर पर पड़ी जो गलियारे के बीचोंबीच रखा था । उसमें दो सुनहरी मछलियाँ थी । मछलीघर को देखना बहुत ही आनंददायक लग रहा था । बहुत समय मैंने उन्हीं को निहारते हुए गुज़ारा । फिर रसोई घर से आवाज़ आई खाना तैयार है । हम सबने मिलकर खाना खाया ।

मेरे मन में अचानक से उन मछलियों का ख्याल आया जो उस छोटे से मछलीघर में इधर–उधर तैर रही थीं । क्या वो घर उनके लिए छोटा है ? क्या वो असहज महसूस कर रहीं है ? क्या वो आज़ादी चाहती हैं ? ऐसे ना जाने कितने सवाल मेरे अंदर घूम रहे थे । फिर मुझे मेरे सुबह का आज का दिन याद आया की कैसे मुझे मेरे कमरे में सुबह दम घूटने सा एहसास हो रहा था। तो बाहर तक घूमने चला गया था। लेकिन ये मछलियाँ सीमित सी जगह में अपने आप से लड़ती जाने कैसे जीती हैं । जबकि उनके रहने की जगह तो खुली नदियाँ, तालाब, समुंदर है और इंसान ने अपनी खुशी और अपने घर की सजावट में इनको घर में कैद कर लिया है । ये सब मैंने अपने मित्र के साथ साझा किया तो उसको भी ये सब ठीक नहीं लगा और उन मछलियों को आज़ाद करने का फैसला लिया ।

राष्ट्रीय एकता

संकलित

इस माटीकी धूल हमारे माथे चन्दन है,
भारत माता तेरे चरणों मे, लाख लाख वंदन है।
देश प्रेम की अलख जगाने, कई वीरो ने जन्म लिया ,
वीर शिवा – राणा जी जैसे, रत्नो ने बलिदान दिया।
राष्ट्र भक्ति की बात आज तो लुप्त सुप्त सी हो रही,
कैसे कहु मै भारत माता, अस्मत तेरी क्यू लुट रही ।
आज चेतना और भावना, सबकी सोई जाती है,
थी एकता और अखंडता बिखरी बिखरी जाती है ।
आम आदमी है परेशान, महगाई का ज़ोर है,
लोकतन्त्र के मायने बदले, भ्रष्टाचार का दौर है ।

कहा खो गई राष्ट्रिय चेतना, उनको पुनः जगाना है,
एक तिरंगे के नीचे, फिर जन जन को लाना है।
रंग – रूप, भाषा–बोली, अलग सही ताकत बने,
मेरे प्यारे भारत वासी, फिर एकता की पहचान बने।
मेरा भारत महान सदा से, और महान बना रहेगा,
किसान–जवान–विज्ञान मिलकर, सारा जहा श्रेस्ठ कहेगा।
ऐसा सूरज कल निकले, भेद–भाव सब भूल उठे,
नया भारत, स्वच्छ भारत, पवित्रता से कल जागे।
नया सवेरा, नई रोशनी, नया विहान आएगा,
सोने की चिड़िया था भारत, फिर सोने की चिड़िया कहलाएगा।

दिल को छू लेने वाले
अनमोल वचन

- गरीबो की बस्ती मे जरा जाकर तो देखो, कहा बच्चे भूखे तो मिलेंगे मगर उदास नहीं ।
- बुराई इसलिए नहीं फ़ेल रही की बुरे लोग अधिक है, बल्कि इसलिए फ़ेल रही है की अच्छे लोग कम है
- खाने से उतनी अक्ल नहीं आती जितना धोखा खाने से आती है
- खुश रहना ही, आप का बुरा चाहने वालों केलिए सबसे बड़ी सजा है
- खूबसूरत लोग हमेशा अच्छे नहीं होते, अच्छे लोग हमेशा खूबसूरत होते है ।
- रिश्ते और रास्ते एक ही सिक्के के दो पहलू है, कभी रिश्ते निभाते निभाते रास्ते खो जाते है और कभी रास्तो पर चलते चलते रिश्ते बन जाते है ।
- बेहतरीन इंसान अपनी मीठी जुबान से ही जाना जाता है, वरना अच्छी बाते तो दीवारों पर भी लिखी होती है ।
- कलयुग मे रुपया चाहे कितना भी गिर जाये, इतना कभी नहीं गिर पाएगा, जितना रुपए के लिए इंसान गिर चुका है ।
- रास्ते मे अगर मंदिर दिखे तो प्रार्थना नहीं करो तो चलेगा, पर रास्ते मे एम्बुलेंस मिले तब प्रार्थना जरूर करना शायद कोई ज़िंदगी बच जाये।।
- जिसके पास उम्मीद है, वह लाख बार हार कर भी नहीं हार सकता ।
- दुनिया मे कोई काम इमपोसिबल नहीं बस हौसला और मेहनत की जरूरत है इमपोसिबल को गौर से देखो वो खुद आई एम पांसिबल ।

अर्जुन तेलंग
तक.(स्या.कार.)

समय चक्र

मैंने हर रोज़ जमाने को रंग बदलते देखा है
उम्र के साथ ज़िंदगी को ढंग बदलते देखा है
वो जो चलते थे तो शेर के चलने का होता था गुमान
उनको भी पाँव उठाने के लिए सहारे को तरसते देखा है
जिनकी नजरों की चमक देख सहम जाते थे लोग उनही
नजरों को बरसात की तरह रोते देखा है ।।
जिनके हाथो के जरा से इशारे से टूट जाते थे पत्थर
उनही हाथो को पत्तों की तरह थर थर काँपते देखा है ।।
जिनकी आवाज़ से कभी बिजली के कड़कने का होता था भरम
उनके होठो पर भी जबरन चुप्पी का ताला लगा देखा है ।।
ये जवानी ये ताकत ये दौलत सब कुदरत की इनायत है
इनके रहते हुये भी इंसान को बेजान हुआ देखा है ।।
अपने आज पर इतना न इतराना मेरे यारो
वक्त की धारा मे अच्छे अच्छों को मजबूर होते हुये देखा है ।।
कर सको तो किसी किसी को खुश करो,
दुख देते हुये तो हजारो को देखा है ।।
इस धरा का इस धरा पर सब धरा रह जाता है ।।
उम्र के साथ ज़िंदगी को ढंग बदलते देखा है।।

नव की ओर

सुरेश शर्मा

बढ़े चलो नित की ओर, संघर्ष करो हर दिन चहु ओर
बढ़े चलो नित नव की ओर, छोड़ो अमित छाप हर ओर
करो जतन नित नव की ओर, बढ़े चलो नित नव की ओर
सोचो नव हर दिन प्रति ओर, बढ़े चलो नित नव की ओर
बनो स्वम निज की सिरपौर, बढ़े चलो नित नव की ओर
बढ़े चलो नित नव की ओर, जब तक दिखे न दूजा छोर।

दो महीने

गौरव कुमार
तकनीशियन (स्याही कारखाना)

वर्ष के दो महीने दिसम्बर और जनवरी

एक वर्ष के अंत की दस्तक देता
दूसरा वर्ष के प्रारम्भ का आगाज
जैसे दिन और रात का बनना
यादों उम्मीद की डोर साथ लाता है।
एक को अनुभव है
दूसरे को विश्वास का साथ है
यूं तो दोनों एक ही जैसे है
जैसे एक तारीखे व दिन
उतना ही समय और दिन रात
उतनी ही सर्दी और बारिश
पर पहचान दोनों की अलग है
दूसरा वादों का नगमा है
दोनों करते है अपना काम।
दिसम्बर मुक्त होता तो
जनवरी पूरे साल का भार ढोता
जनवरी को दिसम्बर तक
लंबा सफर करना है तो
वही दिसम्बर क्षण भर बीता जाये।
दोनों वक्त के राही
दोनों की मंजिल और काल
अलग अलग है फिर भी
दोनों की बात निराली।

गीता सार

गौरव कुमार
तकनीशियन (स्याही कारखाना)

- क्यो व्यर्थ की चिंता करते हो? किससे व्यर्थ डरते हो? कौन तुम्हें मार सकता है? आत्मा न पैदा होती है, न मरती है।
- जो हुआ, वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है, वह अच्छा हो रहा है, जो होगा, वह भी अच्छा होगा। तुम भूत का पश्चाताप न करो। भविष्य की चिंता न करो। वर्तमान चल रहा है।
- तुम्हारा क्या गया, जो तुम रोते हो?तुम क्या लाये थे, जो तुमने खो दिया ? तुमने क्या पैदा किया था, जो नाश हो गया ? न तुम कुछ लेकर आए, जो लिया यही से लिया जो दिया, यही पर दिया। जो लिया इसी (भगवान) से लिया। जो दिया, इसी को दिया।
- खाली हाथ आए और खाली हाथ चले । जो आज तुम्हारा है, कल और किसी का था, परसो किसी और का होगा। तुम इसे अपना समझकर मग्न हो रहे हो। बस यही प्रसन्नता तुम्हारे दुखों का कारण है।
- परिवर्तन संसार का नियम है। जिसे तुम म्रत्यु समझते हो, वही तो जीवन है। एक क्षण मे तुम करोड़ों के स्वामी बन जाते हो, दूसरे ही क्षण मे तुम दरिद्र हो जाते हो। मेरा-तेरा, छोटा-बड़ा, अपना-पराया, मन से मिटा दो , विचार से हटा दो, फिर सब तुम्हारा है, तुम सबके हो।
- न यह शरीर तुम्हारा है, ना तुम शरीर के हो। यह अग्नि, जल, वायु, प्रथ्वी, आकाश से बना है और इसी मे मिल जाएगा। परंतु आत्मा स्थिर है फिर तुम क्या हो ?
- तुम अपने आपको भगवान को अर्पित करो। यही सबसे उत्तम सहारा है । जो इसके सहारे को जानता है वह भय, चिंता, शोक से सर्वदा मुक्त है ।
- जो कुछ भी तू करता है, उसे भगवान को अर्पण करता चल। ऐसा करने से सदा तू जीवन मुक्त का आनंद अनुभव करेगा।

घर पूछता है

नीरज मालवीय
तक. (स्याही कारखाना)

दौलत की गलियो मे भटकते भटकते,
तू क्यू मेरा रास्ता अक्सर भूल जाता है।
गैरो के बीच खुद को साबित करने की जिद मे,
तेरी असल पहचान तू खुद से ही क्यूं छुपाता है।
वो दिन का चैन रातो का सुकून,
अब तुझे क्यू रास नहीं आता है,

ये जिंदगी जिसे तू बैरागी होना कहता है,
मई बंजारा जो कह दूँ, तो क्यू बुरा मान जाता है।
कमाने की होड मे पूंजी तूने जोड़ी है,
क्या सच मे तू जिंदगी से बस यही चाहता है।
जमाने से हारकर जब तू थक जाता है,
घर पूछता है, तू क्यू अक्सर मेरा रास्ता भूल जाता है।

जाड़े की रात

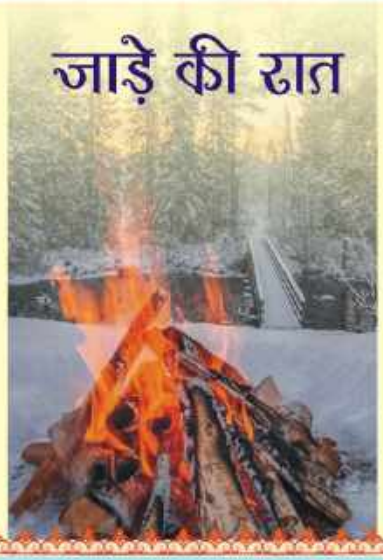

घनी धुन्ध और कुहरा
थर थर काँपे गात
काट से कटती नहीं
यह जाड़े की रात।
किसने घट यह शीट का
दिया रात मे फोड़
नदिया पर्वत झील सब
सोये कुहरा ओ।
चौपाले सूनी पड़ी
धूनी वाले कौन
सर्द हवा से हो गए
रिस्ते नाते मौन
गज भर की है गोदडी
कैसे काटे रात
आग जला करते रहे
होरी गोबर बात ।
छोड़ रज़ाई अब उठो
सी सी करो न जाप
आओ खिलती धूप से
ले ले थोड़ा ताप
दिन भर किरणों ने लिखे
मधुर धूप के छंद
स्याही फेरी सांझ ने
किया तमस मे बंद।
आज कुंनकुनी धूप मे
कुछ पल बैठे साथ
रिश्तो को दे ऊष्मा
ले हाथो मे हाथ।
धूप अलगनी पर टंगी
घर घर धूम शीत
चुन्नु मुन्नू को हुई
अब चूल्हे से प्रीत
वाह ! कुमुदिनी धन्य तू
धन्य टिहरी प्रीत
देकर ऊष्मा मीट को
खुद सहती है शीत।

मेरी दुनिया

उम्र की लंबी सड़क पर
अतीत को पीठ पर लादे
भविष्य को गोद मे लटकाए
आसुओ और पसीनों से लपथप
मीलो सफर के बाद, मुड़कर
मैंने कहा जिंदगी से।
फिर से लौटा दे मेरी वो दुनिया
मेरी मिट्टी की वो सुगंध
वो मुस्कुराहते और
वो गली मुहल्लों और चौबारे
और वही बे तकल्लुफ जुबाने।
लौटा दे फिर वो तंग गलिया
जहा दौड़ लू फिर नंगे पाँव
मिल जाये फिर वो खुशिया
वो महफिल वही ठिकाने
वही दिन वही राते
वो पुराने दोस्तो की यारी
ऐसी हो दुनिया हमारी ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की

अर्द्धवार्षिक बैठक सम्पन्न

देवास, भारत सरकार ग्रह मंत्रालय नगर राजभाषा के अधीन संचालित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन विकास नगर स्थित रामाश्रय में किया गया। इसमें केन्द्रीय सरकार के समस्त कार्यालयों द्वारा हिस्सेदारी की और राजभाष हिन्दी को बढाने के लिए विशेष रूप से चर्चा की गई।

अध्यक्षता बीएनपी के मुख्य महाप्रबंधक श्री राजेश बंसल ने की। मुख्य रूप से केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के कमांडेट, एसबीआई क्षेत्रीय कार्यालय मैनेजर एन.के. शर्मा व उपमहाप्रबंधक विनोद कुमार महरिया थे। श्री बंसल जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा, राजभाषा को अपने दैनिक अधिक से अधिक अपनाएगें।

साथ ही समस्त कार्यालयों में भारत सरकार के निर्देशों का पालन किया जाएगा। इसके बाद नगर राजभाषा क्रर्यान्वयन समिति की हिन्दी मैग्जीन नमन हिन्दी का विमोचन किया गया। इस अवसर पर केन्द्रीय कार्यालयों द्वारा अपनी प्रस्तुतियाँ दी गई। इस दौरान संयुक्त हिन्दी कार्यशाला का भी आयोजन किया। इसमें अतिथि विद्वान एसबीआई राजभाषा प्रबंधक प्रमेधा पांडेय थी। कार्यक्रम में विशेष सहयोग केन्द्रीय विद्यालय के शिक्षक श्री वी.के. पाल का रहा। राजभाषा पखवाडा के विजेताओं को पुरस्कृत किया। संचालन नराकास सचिव श्री संजय भावसार ने किया।

बैंक नोट प्रेस को मिला संरक्षा अवार्ड

देवास, राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद एम.पी. चैप्टर भोपाल के द्वारा वर्ष 2018–19 में संरक्षा के क्षेत्र में सर्वोत्तम कार्य के लिए बैंक नोट प्रेस देवास को हेल्थ, सेफ्टी व इनवायरमेंट प्लेटिनम अवॉर्ड से नवाजा गया।

यह अवॉर्ड कैबिनेट मंत्री पी.सी. शर्मा के द्वारा बी.एन.पी. सी.जी.एम. श्री राजेश बंसल, अपर महाप्रबंधक अशोक कुमार व संरक्षा अधिकारी अनुराग वर्मा ने ग्रहण किया। सी. जी.एम. श्री बंसल ने बताया, यह अवार्ड हमारे सभी कर्मचारियों–अधिकारियों के अथक, गुणवत्तापूर्ण व सुरक्षित तरीके से सर्वोत्तम कार्य निष्पादन का परिणाम है। इस अवार्ड के लिए म.प्र. की 100 से अधिक कम्पनियों ने विभिन्न कैटेगेरी के लिए आवेदन किया था। इस अवार्ड के प्राप्त होने से कर्मचारियों–अधिकारियों संघों में हर्ष है। अपर महाप्रबंधक अशोक कुमार, संरक्षा सदस्य कमलसिंह चौहान, आशीष दत्त, इरफान शेख, चन्द्रशेखर दुबे आदि ने बधाई दी।

उत्कृष्ट नवोन्मेषी पुरस्कार से बैंक नोट प्रेस सम्मानित

देवास, नई दिल्ली में सम्पन्न भारतीय उद्योग महासंघ (सीआईआई) के अनुसंधान एवं विकास इकोसिस्ट कॉनक्लेव में देवास स्थित बैंक नोट प्रेस को उत्कृष्ट नवोन्मेषी पुरस्कार और विशिष्ट उत्पाद श्रेणी में विजेता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। बीएनपी के राजभाषा अधिकारी श्री संजय भावसार ने बताया कि उद्योग निकाय की सर्वोत्तम संस्था सीआईआई द्वारा नवोन्मेषी उत्कृष्टता के लिए देशभर में 25 सर्वोच्च कम्पनियों का चयन किया गया और विशिष्ट उत्पाद श्रेणी में भी विजेता रही। इस प्रकार बीएनपी को दो पुरस्कार प्राप्त हुए। यह पुरस्कार प्रधानमंत्री की आर्थिक परामर्शदात्री परिषद के सदस्य सचिव रतन पी बातल के करकमलों द्वारा बीएनपी मुख्य महाप्रबंधक श्री राजेश बंसल और अपर महाप्रबंधक श्री एस. महापात्र द्वारा ग्रहण किया गया। उल्लेखनीय है कि इन श्रेष्ट 25 कम्पनियों में बीएनपी एकमात्र सरकारी कम्पनी है, जिसे विशिष्ट प्रतिभूति स्याही उत्पाद निर्माण श्रेणी में यह पुरस्कार प्रदान किया गया। बीएनपी की इस उपलब्धि पर वेलफेयर एवं समस्त यूनियनों एवं समस्त कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने हर्ष व्यक्त किया।

बीएनपी की सीएसआर योजना के अंतर्गत दिव्यांगजनों को सहायक उपकरण प्रदान करने हेतु

परीक्षण शिविर सम्पन्न

देवास, बैंक नोट प्रेस द्वारा कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व सीएसआर के अंतर्गत देवास जिले के दिव्यांगजन के लिए निःशुल्क सहायक उपकरण प्रदान करने हेतु परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। बीएनपी के सीएसआर कार्यक्रम प्रभारी श्री संजय भावसार ने विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम कानपुर की उज्जैन स्थित उत्पादन इकाई और जिला प्रशासन के सहयोग से यह कार्यक्रम उत्कृष्ट विद्यालय में आयोजित किया गया। भावसार ने बताया कि कलेक्टर डॉ. श्रीकांत पांडेय और बीएनपी के मुख्य महाप्रबंधक श्री राजेश बंसल के निदेशों के अनुरुप इस कार्यक्रम में 170 दिव्यांगजन का पंजीकरण हुआ। परीक्षण उपरांत श्रेणीवार उनकी दिव्यांगता के अनुरुप सभी को कृत्रिम अंग दिसम्बर माह की उपयुक्त तिथि में दिए जाएंगे। शिविर स्थल पर जिला पंचायत की मुख्य कार्यपालन अधिकारी सुश्री शीतला पटले, जनपद सीईओ राजेन्द्र यादव और सामाजिक न्याय विभाग के उप संचालक श्री राजेश कामदार द्वारा लाभार्थियों से प्रत्यक्ष चर्चा कर उनकी कठिनाईयों का निराकरण भी किया गया और दिव्यांगता प्रमाणपत्र भी मेडिकल टीम द्वारा प्रदान किए गए।

बी एन पी द्वारा कवड़िया ग्राम में सीएसआर और दीपोत्सव उपहार कार्यक्रम सम्पन्न

बीएनपी द्वारा अपने सीएसआर कार्यक्रम के अंतर्गत कवड़िया ग्राम में कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम समन्वयक श्री संजय भावसार, राजभाषा अधिकारी ने जानकारी देते हुए बताया कि ग्राम कवड़िया में ग्रामवासियों की मूलभूत आवश्यकताओं के संबंध में बी एन पी के महिला मंडल द्वारा ग्रामीण महिलाओं की रोजगार और अन्य मूलभूत आवश्यकताओं के संबंध में चौपाल सभा और व्यक्तिशः प्रत्यक्ष चर्चा की गई ताकि सीएसआर के अंतर्गत उनकी सर्वांगीण उन्नति पर ठोस कार्य किया जा सके।

उल्लेखनीय है कि बीएनपी द्वारा देवास जिले के अंतर्गत बागली के कावड़िया ग्राम को बी एन पी द्वारा गोद लिया गया है। ग्रामीण महिलाओं द्वारा बी एन पी महिला मंडल की अध्यक्षा सुश्री मोना बंसल और अन्य महिला सदस्यों के साथ चर्चा के दौरान जैविक खाद निर्माण, ब्यूटी पार्लर, मेहंदी प्रशिक्षण, अगरबत्ती निर्माण, मोमबत्ती निर्माण आदि स्वरोजगार प्रशिक्षण के लिए अपना रुझान व्यक्त किया। इस अवसर पर ग्राम में गठित स्वयं सहायता समूह की महिला सदस्य और अन्य महिलाएं उपस्थित थी।

उल्लेखनीय है कि बीएनपी द्वारा ग्राम के प्रत्येक घर में नल -जल योजना को भी बी एन पी महाप्रबंधक श्री राजेश बंसल के प्रयासों से एस पी एम सी आई एल, नई दिल्ली द्वारा मंजूर किया जा चुका है और स्वरोजगार प्रशिक्षण और स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार की अन्य योजनाओं का जमीनी अध्ययन भी इस प्रकार के कार्यक्रम के माध्यम से किया जा रहा है।

श्री भावसार ने आगे बताया कि इस कार्यक्रम के साथ ही दीपावली के उपलक्ष्य में महिला क्लब अध्यक्षा सुश्री मोना बंसल के कर-कमलों द्वारा मिष्ठान्न और बर्तन उपहार भी प्रत्येक ग्रामीण गृह को देने के साथ संबोधित भी किया गया। 100 से ज्यादा स्कूली बच्चों को शिक्षण सामग्री भी वितरित की गई।

इस अवसर पर ग्राम सरपंच सर्वश्री भवर सिंह, बीएनपी के अधिकारियों अखिलेश गुप्ता, संजय भावसार, सुभाष कुमार आदि द्वारा भी संबोधित किया गया और बीएनपी की ग्राम उत्थान की सी एस आर योजना को विस्तार से बताया गया।

इस अवसर पर सर्वश्री मोहम्मद नवाज, ए. आर. राठौर, विवेक प्रसाद, महिला मंडल की सदस्या अरोरा मैडम, महापात्रा मैडम, महरिया मैडम के साथ अन्य पदाधिकारी, मध्यप्रदेश राज्य आजीविका मिशन से श्री कंवर राम, जिला पंचायत स्टाफ से दीप्ति जाधव मैडम, कावड़िया स्कूल के हेडमास्टर श्री लाखन सिंह और उनके स्टाफ और सैकड़ों की संख्या में ग्रामीणजन आदि उपस्थित थे।

बीएनपी द्वारा सतर्कता जागरूकता सप्ताह
के अंतर्गत विविध कार्यक्रमों का आयोजन

ईमानदारी एक जीवन शैली थीम पर बीएनपी में सतर्कता सप्ताह का शुभारंभ । केंद्रीय सतर्कता आयोग के निदेशानुसार बीएनपी में सतर्कता सप्ताह का शुभारंभ हुआ ।

इस दौरान ग्राम कावड़िया में ग्रामवासियों के लिए ग्राम सभा का आयोजन किया गया और स्कूली बच्चों के लिए निबंध, रंगोली और चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और बच्चों को पुरस्कार वितरण भी किया गया ।

बी एन पी के वरिष्ठ सतर्कता अधिकारी डॉ जी एस जारेडा ने जानकारी देते हुए बताया कि इस सप्ताह के दौरान बीएनपी द्वारा अनेक प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है । जिनमें विभिन्न स्कूलों, कॉलेजों में वाद विवाद, निबंध, पोस्टर , क्विज़ आदि प्रतियोगिताएं, इंटेग्रिटी क्लब की स्थापना, सतर्कता शपथ, सयाजी गेट पर मानव श्रृंखला निर्माण, पैम्पलेट वितरण आदि सम्मिलित है ।

बीएनपी द्वारा चलाये जा रहे सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत जन सामान्य में भ्रष्टाचार के विरुद्ध अलख जगाने हेतु देवास शहर के हृदय स्थल सयाजी द्वार पर भ्रष्टाचार के विरुद्ध मानव श्रृंखला का निर्माण किया गया । विस्तृत जानकारी देते हुए बीएनपी के राजभाषा अधिकारी श्री संजय भावसार ने बताया कि केंद्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा कार्यक्रम समन्वयक श्री अखिलेश गुप्ता की अगुवाई में 9 मीटर रेडियस में विजिलेंस लोगो की प्रतिकृति का मानव श्रृंखला के रूप में निर्माण कर भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई का शंखनाद किया गया ।

इस अवसर पर हुए जागरूकता कार्यक्रम में बीएनपी के नई दिल्ली स्थित निगम मुख्यालय से आगत सुश्री तृप्ति पात्रा घोष, सीएमडी, श्री एस.के. सिन्हा, निदेशक (मानव संसाधन) और सुश्री ममता सिंह, मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्री राजेश बंसल, महाप्रबंधक, बीएनपी द्वारा ईमानदारी एक जीवन शैली थीम पर अपीलिंग पैम्पलेट का अनावरण भी किया गया और केंद्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों के साथ तख्तियों पर लिखे नारे के साथ नारों का घोष भी किया गया ।

इस अवसर पर मंच पर श्री एस महापात्रा, श्री अशोक कुमार अरोरा ,डीजीएम द्वय, सुश्री किरण मिश्रा, प्राचार्या, केंद्रीय विद्यालय, श्री विनोद जी महरिया, प्रबंधक, डॉ जी एस जारेडा, व सतर्कता अधिकारी, श्री एल एन मारू, बीएमएस प्रमुख आदि भी उपस्थित थे ।

कार्यक्रम का प्रभावी संचालन और आभार प्रदर्शन श्री बृजेश कुमार पाल द्वारा और सहयोग श्री मो नवाज़, आलोक राठौर पायलट, श्री पुष्पेंद्र पाल सिंह और श्री कमल सिंह चौहान आदि द्वारा किया गया ।

बीएनपी में मृत कर्मचारियों के आश्रितों और अन्य को पेंशन ऑर्डर का वितरण कार्यक्रम आयोजित

बीएनपी में मृत कर्मचारियों के आश्रित परिजनों और 58 वर्ष पूर्ण करने वाले कर्मचारियों को एक समारोह का आयोजन कर पेंशन ऑर्डर सौंपे गये।

विस्तृत जानकारी देते हुए बीएनपी के राजभाषा अधिकारी श्री संजय भावसार ने बताया कि बी एन पी के निगमीकरण के पश्चात से दस्तावेजों के अभाव और अन्य तकनीकी कारणों से पेंशन प्रकरणों का निराकरण नहीं हो पा रहा था जिस कारण मृत कर्मचारियों के आश्रितों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा था। बीएनपी के महाप्रबंधक श्री राजेश बंसल द्वारा इस कार्य को प्राथमिकता पर लेते हुए कर्मचारी भविष्य निधि के क्षेत्रीय कार्यालय, इंदौर के आयुक्त के साथ समय समय पर चर्चा कर इस प्रक्रिया में आ रही समस्त कठिनाइयों का निराकरण कर पेंशन सुनिश्चित करवाई गई।

लाभार्थियों को पेंशन ऑर्डर वितरण के लिए और इस संबंध में जागरूकता के प्रसार के लिए एक समारोह का आयोजन बीएनपी के श्रम कल्याण केंद्र में आयोजित किया गया था। इस अवसर पर बीएनपी के निगम मुख्यालय से पधारी सुश्री तृप्ति पात्रा घोष, सीएमडी, श्री एस के सिन्हा, निदेशक(मानव संसाधन), श्री अमरजीत मिश्रा, क्षेत्रीय आयुक्त, कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, इंदौर के कर कमलों द्वारा मृत कर्मचारियों के आश्रितों को और 58 वर्ष पूरा कर चुके कर्मचारियों को 11 पेंशन ऑर्डर प्रदान किये गए।

इस अवसर पर सुश्री तृप्ति पात्रा घोष ने संबोधित करते हुए कहा कि निगम की नौ इकाइयों में बीएनपी पहली यूनिट है जिसने पेंशन ऑर्डर प्रदान किये और एरियर और पेंशन का ऑनलाइन भुगतान सुनिश्चित किया।

श्री एस के सिन्हा ने इस अवसर को बहुत ही मार्मिक निरूपित करते हुए कहा कि यह दिन बहुत ही ऐतिहासिक है। श्री अमरजीत मिश्रा ने भी भविष्य में इस संबंध में हर संभव सहायता का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर मृत कर्मचारियों के आश्रितों ने भावुक होकर बताया कि इस पेंशन और उसके एरियर से बच्चों की शिक्षा और बेटियों का विवाह सुगमता से हो सकेगा।

इस अवसर पर निगम मुख्यालय, नई दिल्ली से पधारीं सुश्री ममता सिंह, मुख्य सतर्कता अधिकारी भी उपस्थित थीं।

कार्यक्रम का संचालन श्री पी.के. मुदगल द्वारा आभार डॉ. जी.एस. जारेडा, वरिष्ठ सतर्कता अधिकारी द्वारा और सहयोग सर्वश्री कमल सिंह चौहान और नीरज सिकलीगर द्वारा किया गया।

हर बार

परिधि मारु
सुपुत्री श्री एल.एन. मारु , पर्यवेक्षक (मुद्रण)

चल तुझे आज एक बात बताती हूँ,
तेरे कर्मों के फल के लिए, हर बार मैं आवाज उठाती हूँ।
मैं तो बस बन जाती हूँ,एक कहानी,
जब-जब कर जाता है तू, अपनी मनमानी।
गलत है कि मैं जीवन में आगे बढ़ रही हूँ,
या तेरी आँखों में इसी बात के लिए, मैं अड़ रही हूँ।
मेरी कुर्ती की बाँहें दिखती तुझे छोटी है,
यह तेरी नज़र ही खोटी है।
मेरा रात में घूमना गँवारा नहीं,
या तेरा चरित्र तूने कभी संवारा नहीं ।
मेरे छोटे कपड़े, तुझे रास नहीं,
या तेरी ये सोच ही कुछ खास नहीं ।
मेरा लड़कों के साथ बाहर जाना सही नहीं,
या तू चाहता है, तेरा खौफ हो हर कहीं।
मेरी बस एक उम्र पर ही नहीं तू थमता है,
मैं बूढ़ी हूँ या बच्ची, मेरा लड़की पैदा होना ही नहीं जमता है।
ऐसे भी लोग है जो मुझे समझ पाते हैं,
पर तेरे नापाक इरादों के चलते वो भी शक में घसीटे जाते हैं।
ये सब जानकर भी मेरा, खुलकर जीना क्यों सही होगा,
तू मेरा काम बेखौफ करता जाएगा और
हर बार अंजाम, कुछ नहीं या वही होगा।

हाँ तू मेरी परछाई है

सुश्री मोना बंसल
द्वारा- श्री राजेश बंसल
(मुख्य महाप्रबंधक)

हाँ तू मेरी परछाई है, तू मेरी ही तो जाई है।
मैं जानती हूँ तुझे, तुझसे भी ज्यादा।
मुझे विश्वास है तुझ पर, अपने से भी ज्यादा।।
तेरे दिल की हर बात, तेरी आँखों में पढ़ लेती हूँ।
तू लाख छिपा हालात, तेरी जुबां की थिरकन।
सुना जाते हैं मुझे, तेरे मन की बात।।
कौन सी बात तुझे चुभ जाती है,
कौन से हालात में तू चट्टान सी डट जाती है।
कौन सी बात तुझे रूला जायेगी,
कौन सी बात पर तू रोते हुये भी हँस जायेगी।
कौन कहता है बेटी पराई होती है,
एक माँ से पूछो बेटी उसकी परछाई होती है।।
हां तू मेरी परछाई है,तू मेरी ही जो जाई है।

रूपये का इतिहास

अवश्य पढ़ें- प्राचीन भारतीय मुद्रा बच्चों को भी जरूर पढ़ायें...

फूटी कौड़ी	से	कौड़ी
कौड़ी	से	दमड़ी
दमड़ी	से	धेला
धेला	से	पाई
पाई	से	पैसा
पैसा	से	आना
आना	से	रुपया बना

256 दमड़ी = 192 पाई = 128 धेला = 64 पैसा (पैसा)=16 आना = 1 रुपया

3 फूटी कौड़ी	=	1कौड़ी
10 कौड़ी	=	1 दमड़ी
2 दमड़ी	=	1 धेला
1.5 पाई	=	1 धेला
3 पाई	=	1 पैसा (पुराना)
4 पैसा	=	1 आना
16 आन	=	1 रुपया

प्राचीन मुद्रा की इन्हीं ईकाइयों ने हमारी बोल-चाल की भाषा को कई कहावतें दी हैं, जो पहले की तरह अब भी प्रचलित है-

- *एक फूटी कौड़ी भी नहीं दूंगा।*
- *धेले का काम नहीं करती हमारी बहू।*
- *चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए।*
- *पाई-पाई का हिसाब रखना।*
- *सोलह आने सच इत्यादि*

* Our children & Grand children must know the old history of small coins. Our one rupee was consisting of 256 parts called "DAMARI"

सेवा निवृत्ति सम्मान समारोह

नवागत / बीएनपी में स्थानांतरित का स्वागत

श्री जी.एन.एस. राव
उप प्रबंधक (तक. प्रचा.)

श्री अभिनंदन जैन
उप प्रबंधक (तक. प्रचा.)

श्री एन.एल पाल
सहायक प्रबंधक (तक. प्रचा.)

श्री विक्रम सिंह ठाकुर
सहायक प्रबंधक (विधि)

श्री अखिल भगत
उप प्रबंधक (तक. प्रचा.)

श्री पी.पी. कुलकर्णी
उप प्रबंधक (तक. प्रचा.)

पदोन्नतियां

श्री एन.एस. राव
उप महाप्रबंधक (तक. प्रचा.)

श्री एस. सुगुमार
उप प्रबंधक (तक. प्रचा.)

श्री एस. दास
उप प्रबंधक (तक. प्रचा.)

श्री आशिक हुसैन शामी
उप प्रबंधक (तक. प्रचा.)

दिनांक 14 अप्रैल 2019, बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी की 128वी जयंती के पर सम्पन्न कार्यक्रम

दिनांक 21 जून 2019, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सम्पन्न कार्यक्रम

दिनांक 10 अप्रैल से 16 अप्रैल 2019, के दौरान पीएसयू दिवस पर सम्पन्न कार्यक्रम

दिनांक 01 अप्रैल 2019, ऐतिहासिक उत्पादन लक्ष्य प्राप्त करने पर सहभोज कार्यक्रम

मुद्रणालय में पर्यावरण दिवस का आयोजन

बीएनपी द्वारा स्वच्छता पखवाडा कार्यक्रम का आयोजन

विशाखा गाईड लाइन के अनुरुप बीएनपी के प्रशासनिक भवन में महिलाकर्मियों को विशेष सुविधा प्रदान करने के लिए विश्राम कक्ष का उद्घाटन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन

पुस्तक-यात्रा का आयोजन

बीएनपी में काव्य-पाठ का आयोजन

सीएसआर गतिविधियां

बीएनपी राजभाषा प्रज्ञान व्याख्यानमाला में डॉ. मोहन गुप्त और आचार्य शैलेंद्र पाराशर के व्याख्यान का आयोजन सम्पन्न

स्टाफ में अंतः प्रज्ञा, नैतिक मूल्यों की उच्च स्थापना, और बेहतर कार्यशीलता और राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोगों में वृद्धि के लिए बीएनपी में आयोजित की जा रही राजभाषा प्रज्ञान व्याख्यानमाला में उज्जैन से आमंत्रित दो प्रतिष्ठित वक्ताओं के व्याख्यान का आयोजन किया गया।

बीएनपी के राजभाषा अधिकारी श्री संजय भावसार ने विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि बीएनपी में डॉ. मोहन गुप्त, आई.ए.एस. और पूर्व कुलपति, महर्षि पाणिनि संस्कृत वि.वि. उज्जैन और आचार्य प्रो. शैलेंद्र पाराशर, पूर्व अध्यक्ष, डॉ. आंबेडकर पीठ, विक्रम वि.वि. इस व्याख्यानमाला में आमंत्रित किये गए थे।

व्याख्यान का विषय कुशल प्रबंधन में नैतिक मूल्यों की भूमिका था। मुख्य अतिथि डॉ. मोहन गुप्त ने संबोधित करते हुए कहा कि परस्पर संबाद और अंतवैयक्तिक संबंधों के द्वारा बेहतर प्रबंधन और व्यक्ति के भीतर स्थित सत प्रवृत्ति में वृद्धि कर रज और तम की कमी की जा सकती है, इससे स्वतः नैतिकता में वृद्धि हो जाएगी।

विशिष्ट अतिथि वक्ता आचार्य पाराशर ने संबोधित करते हुए कहा कि पहले स्वयं को प्रबंधित करना आवश्यक है तत्पश्चात अन्य को प्रबंधित करना चाहिए। पहले शरीर को प्रबंधित करें, तत्पश्चात भावों और विचारों को प्रबंधित करना होगा। यदि हम सही विधि से सही सोच से कार्य करेंगे तभी हमारा प्रबंधन सफल होगा।

इस व्याख्यानमाला के अध्यक्ष बीएनपी के महाप्रबंधक श्री राजेश बंसल थे। उन्होंने अपने संबोधन में दोनों अतिथि वक्ताओं के प्रबोधन और मार्गदर्शन के लिए कृतज्ञता अर्पित की और शाल श्रीफल से उनका स्वागत सम्मान किया।

इस अवसर पर बीएनपी के उपमहाप्रबंधक द्वय श्री एस. महापात्रा, श्री अशोक कुमार अरोरा, सी आई एस एफ कमांडेंट श्री नागेंद्र शर्मा, बी.जी. महरिया, मुकेश दुबे, नीलू द्विवेदी, अखिलेश गुप्ता, डॉ. जी.एस. जारेडा, एन.एस. राव, मंगेश कासवेकर, एस. बैनर्जी, इश्वबनाथ जीभे, मंगेश हिरलकर, सुनील मोजाड, हिमांशु शुक्ला, जे.एस. पंवार, जितेंद्र कुमार, मोहम्मद नवाज, आर.पी. सिंह, सुभाष कुमार, सौरभ प्रजापत आदि अधिकारी और विभिन्न यूनियन पदाधिकारी उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन श्री संजय भावसार ने और आभार प्रदर्शन श्री पुष्पेंद्र पाल सिंह ने किया। नितिन श्रीवास्तव और विवेक प्रसाद द्वारा सहयोग प्रदान किया गया।

स्वतंत्रता दिवस -2019 की झलकियाँ

मुख्य अतिथि – मा. श्री राजेश बंसल, मुख्य महाप्रबंधक, बी.एन.पी.

प्रविष्टि आमंत्रण क्र. 07

हिन्दी में कहानी या कविता लिखें

प्रविष्टि भेजने का पता है

संजय भावसार

उप प्रबंधक (राजभाषा)

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास (म.प्र.)

सम्पर्क - 9713543275/ 07272-268 331

Email : sanjay.bhawsar@spmcil.com

उपर दी गई तस्वीरों को (प्रविष्टि क्र. 07) देखकर आपको हिन्दी में कोई प्रेरणास्पद कहानी या कविता मुद्रापथ को लिखकर भेजना है। श्रेष्ठ कहानी/कविता को पुरस्कार के लिएअनुशंसित किया जाकर मुद्रापथ में प्रकाशित भी किया जायेगा।

मुद्रांकन प्रिंटर्स, इंदौर - 9893699948

नोट- बीएनपी के कर्मचारी/अधिकारी, उनके परिजन और रक्त संबंधियों को प्रतियोगिता में प्राथमिकता दी जायेगी।